मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग ६

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(छठा भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज २११००६ (उ० प्र०)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण

नाग पञ्चमी, 'सर्व-जित्' सम्वत् २०५१ वि०–११ अगस्त, ९४

मूल्य : २५-०० रु०

मुद्रक
परावाणी प्रेस
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज २११००६ (उ० प्र०)

अनुक्रमणिका

१ पूर्व-कथन : शाबर-सिद्धि के सोपान ७
श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह, जामनगर (गुजरात)

२ शाबर मन्त्र-कोश १४
श्री भैरवानन्दनाथ, १०८ चकराघाट, सागर (म० प्र०)

३ बङ्गाल के कुछ सिद्ध शाबर मन्त्र १७
श्री विश्वनाथानन्द नाथ, कतरासगढ़, धनबाद (बिहार)
१ सर्प-वशीकरण मन्त्र, २ सर्प को घेरे में बाँधना, ३ सर्प-मुख-बन्धन-मन्त्र, ४ सर्प का विष दूर करना।

४ भद्र-काली का शाबर मन्त्र १९
श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा, नदी मार्ग, मुजफ्फरपुर (उ० प्र०)

५ परीक्षित शाबर मन्त्र २०
श्री सूरज सारस्वत, रैल, हमीरपुर (हि० प्र०)
१ 'रक्षा-पाल' का मन्त्र, २ 'रक्षा' के मन्त्र, ३ पञ्च-पीर का मन्त्र, ४ रक्षाकारी अहमद पठान का मन्त्र, ५ अभिचार-विपरीत चालन मन्त्र, ६ जङ्गी माता का मन्त्र, ७ रोड़का काली का मन्त्र, ८ उच्चाटन-शान्ति-करण मन्त्र, ९ तान्त्रिक बाधा-नाशक भैरव मन्त्र, १० गाय-भैंस की दुग्ध-वृद्धि हेतु मन्त्र, ११ थनैली - रोग का मन्त्र, १२ वशीकरण मन्त्र, १३ कीलक मन्त्र, १४ बन्दूक-पिस्तौल-बन्धन मन्त्र, १५ रुद्राक्ष का मन्त्र, १६ बिच्छू के विष को झाड़ने का मन्त्र, १७ बिच्छू का विष दुबारा चढ़ाने का मन्त्र, शाबर मन्त्र-कोश।

६ दो सिद्ध शाबर मन्त्र २८
पं० काशीप्रसाद शुक्ल, अठसराय, प्रयागराज (उ० प्र०)
१ आसो देवी का मन्त्र, २ आकर्षण हेतु महिषासुर-मन्त्र।

७ दो अचूक एवं गुप्त प्रयोग २९
श्रीमती किरन मित्तल, बहादुरगढ़, रोहतक (हरियाणा)
१ भूत-प्रेत आदि को दूर करने का प्रयोग, २ सिद्ध सैय्यद मियाँ पहलवान प्रयोग।

८ शाबरी मन्त्र श्रीहनुमान जी ३०
डा० जगदीशशरण बिलगइयाँ, दतिया (म० प्र०)

९ प्रामाणिक मन्त्र-संग्रह ३१
श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह, जामनगर (गुजरात)
१ आजीविका-दायक मन्त्र, २ नजर-दोष, दृष्टि-दोष-निवारण प्रयोग, ३ सर्वाङ्ग-पीड़ा-निवारक मन्त्र, ४ रोग-निवारण प्रयोग, ५ सर्व-कार्य-साधक जँजीरा, ६ मुकदमा जीतने का मन्त्र, ७ शत्रु-दमन का अनुभूत प्रयोग, ८ आकर्षण के सरल प्रयोग।

१० प्रश्नों के उत्तर ४२

११ पीरानी शाबर मन्त्र ४५
श्री सैय्यद मोहम्मद कादरी बापू
जामनगर (गुजरात)
१ उपयोगी 'प्रयोग', २ मोहिनी मन्त्र, ३ कन्या विवाह हेतु अनुभूत प्रयोग, ४ अभिचार-निवारक प्रयोग, ५ चोरी हुई वस्तु पाने के लिए प्रयोग, ६ चोरी की खबर पाने के लिए प्रयोग, ७ बवासीर दूर करने का मन्त्र, ८ ज्वर-नाशक प्रयोग, ९ पेट के दर्द के लिए मन्त्र, १० दरगाह-सिद्धि का प्रयोग।

१२ शाबर मन्त्र-संग्रह ५२

श्री रामकृष्ण व्यास, कोट, डीडवाडा, नागौर (राजस्थान)

१ वशीकरण-प्रयोग, २ भूत-बाधा दूर करने के लिए सिद्ध प्रयोग, ३ पीलिया झाड़ने का मन्त्र, ४ बाय-गोले का दर्द झाड़ना, ५ हाजरात का मन्त्र, ६ स्वप्न में प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का मन्त्र, ७ सुशुद्ध नृसिंह-प्रयोग।

१३ शाबर-संरक्षण मन्त्र ५५

श्री सन्तोषकुमार घुटके, नासिक (महा-राष्ट्र)

१४ सिद्ध शाबर-मन्त्र ६०

पं० कृष्णानन्द मिश्र वैद्य, ककरा, प्रयागराज (उ० प्र०)

१ चमत्कारी हनुमत जँजीरा मन्त्र २ हनुमान जी का रक्षा-कारक मन्त्र, ३ शीतला देवी का बाधा-नाशक मोहन-विधान, ४ अग्नि-शमन का हनुमान-विधान, ५ सर्व - कार्य - सिद्धि एवं रक्षा - कारक मन्त्र, ६ चोर पहचानने का शाबर - विधान, ७ सरस्वती देवी का सिद्ध शाबर-विधान।

१५ श्री गणेश-गायत्री, त्रि-काल-गायत्री ६४

श्री जैरामभाई, लक्ष्मणभाई भारद्वाज

१६०, ए नेमीनाथ नगर, अहमदाबाद (गुजरात)

१६ एक दुर्लभ पाण्डुलिपि ६६

श्री आशुतोष अवस्थी, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

१७ अनुभूत शाबर-मन्त्र ६८

श्री रामशङ्कर उपाध्याय, बक्सर (बिहार)

१ अभीष्ट व्यक्ति को बुलाने का मन्त्र, २ आकर्षण मन्त्र, ३ वशीकरण-मन्त्र, ४ मनोवाञ्छित कार्य पूरा कराने का मन्त्र, ५ क्रोध-प्रशमन-मन्त्र।

१८ पैंतीस अक्षरी मन्त्र ७०

डा० दामोदरदत्त मिश्र, भोजपुर (बिहार)

१९ शाबर-मन्त्र-रत्नाकर ७२

श्री भैरवानन्दनाथ, १०८ चकराघाट, सागर (म० प्र०)

१ आत्म-रक्षा-मन्त्र, २ आधा-सीसी-नाशक मन्त्र, ३ सिर-दर्द-नाशक मन्त्र, ४ उदर - पीड़ा - नाशक मन्त्र, ५ आँख का दर्द-नाशक मन्त्र, ६ दन्त-पीड़ा-नाशक मन्त्र, ७ मासिक धर्म के कष्टों का निवारण, ८ पीलिया झाड़ना, ९ कुश्ती जीतने का मन्त्र, १० स्त्री-वशीकरण, ११ कुछ उपयोगी टोटके।

२० कुछ स्पष्टीकरण ७९

श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह एवं श्री रामकृष्ण व्यास

२१ प्रकाशकीय ८०

एक परामर्श

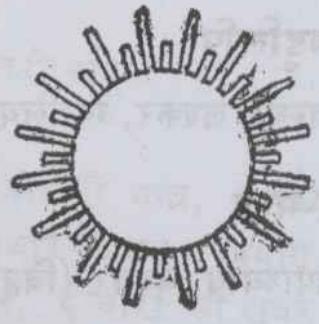

पूर्व-कथन :

'शाबर'-सिद्धि के सोपान

प्रस्तुत-कर्त्ता—श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह

[बनीयावाड़, जामनगर (गुजरात) से श्री शाह ने 'शाबर मन्त्र' की साधना करनेवाले बन्धुओं के लिए अत्यन्त उपयोगी सुझाव लिखने की कृपा की है। इन सुझावों से 'शाबर-साधना' के सम्बन्ध में अनेक ज्ञातव्य बातें ज्ञात होती हैं। इसके लिए उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम है। उन्हें हार्दिक धन्यवाद।—सम्पादक]

जिस प्रकार प्राचीन 'मन्त्र-शास्त्र' आदि गुरु भगवान् शिव और शिवा से प्राप्त हैं, वैसे ही शाबर-मन्त्र भी शिवजी व पार्वती से ही प्राप्त हैं। आदि काल से, समानान्तर रूप में शाबर-मन्त्र 'प्रयोग' में आते रहे हैं। शाबर-मन्त्रों की प्रणाली लौकिक है, तो भी 'प्रयोग' फल-दायक हैं। अतः शाबर मन्त्रों का स्वतः सञ्चरण-सम्वर्धन जन-समुदायों में विविध प्रकार से आज भी चल रहा है।

शाबर मन्त्र का अपना विशिष्ट स्वरूप भी है। कुछ शाबर मन्त्रों में अर्थ निष्पन्न होता है, तो कुछ में नहीं। शाबर मन्त्र भाषा के व्याकरण के बन्धनों से सर्वथा मुक्त रहते हैं। शाबर मन्त्रों में सुधार करने की आज्ञा नहीं है। जिस रूप में शाबर मन्त्र उल्लिखित हैं, उसी रूप में 'जप' करने का नियम है। अतः शाबर मन्त्र-साधना सरल भी है। तभी देश के भिन्न-भिन्न भागों में, विविध भाषाओं में एवं असंख्य सम्प्रदाय-वर्गों में शाबर मन्त्र आज भी सुरक्षित हैं।

शाबर मन्त्रों की सामान्य साधना

शाबर-मन्त्र की सामान्य साधना में 'दीक्षा' की आवश्यकता नहीं होती। ध्यान, न्यास, मुद्राएँ और उपचार की भी आवश्यकता नहीं होती। हाँ, शाबर मन्त्र के साथ-साथ शाबर मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म, ताबीज और गण्डा का विधान दिया जाता है। जल-अभिमन्त्रण,

स्पर्शन-प्रोक्षण का प्रयोग होता है तथा पञ्च-तत्त्वों का भी उपयोग होता है, जिससे सफलता शीघ्र प्राप्त हो।

इस प्रकार, सामान्य साधना में 'गुरु' हों, तो ठीक अन्यथा शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-रूपी सामान्य कर्मों में, स्वयं उचित ढङ्ग से कार्य करे। सामान्य साधना के अतिरिक्त अन्य षट्-कर्मों में, मोहन-आकर्षण-वशीकरण आदि उग्र काम्य-कर्मों में, बिना 'गुरु'-आज्ञा के कुछ भी न करे, यही नियम व युक्त परामर्श है।

शाबर मन्त्र स्वयं-सिद्ध मन्त्र माने जाते हैं, इनमें उत्कीलन आदि की आवश्यकता नहीं रहती। पौराणिक मन्त्रों की तरह इनका 'जप' होता है। मन्त्र का 'जप' समाप्त करने से छुटकारा भी हो जाता है। किसी प्रकार का मन्त्र-निग्रह करने या कराने की आवश्यकता नहीं होती। संक्षेप में, शाबर मन्त्र पूर्णतया निर्दोष हैं। सामान्य साधना में साधक को किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नहीं है। हाँ, प्रयोग-सिद्धि द्वारा किसी को कष्ट देने से साधक का पतन हो जाता है, मन्त्र-देह से मन्त्र-देव रुष्ट हो जाता है, मन्त्र स्वयं निष्प्राण हो जाता है और साधक का हाल बेहाल हो जाता है। अतः भूलकर भी किसी को कष्ट देने के प्रयोजन से शाबर-मन्त्र की सामान्य साधनाओं का प्रयोग न करे।

शाबर मन्त्र-साधना प्रारम्भ करने हेतु तिथियाँ

शाबर मन्त्र-साधना सूर्य या चन्द्र-ग्रहण, रविवार, मङ्गलवार, पर्व-काल, सूर्य-संक्रान्ति, होली, दीपावली, दशहरा, गङ्गा-दशहरा, शिव-रात्रि या नव-रात्रियों से प्रारम्भ की जा सकती है। साधना दिन में प्रारम्भ की जाए या रात में–यह प्रश्न गौण है। मुख्य बात यह है कि साधना तभी प्रारम्भ करे, जब साधक पूर्णतया निश्चिन्त व चैतन्य हो।

साधना प्रारम्भ करने पर यदि एक दिन में निर्धारित 'जप' पूरा न हो, तो प्रारम्भ करने के दिन से क्रमशः आगे के दिनों में 'जप' चालू रक्खे और जब तक निर्धारित संख्या पूर्ण न हो, तब तक करे। साधना प्रारम्भ करने की तिथि-दिन याद रक्खे। प्रति वर्ष उन्हीं तिथियों-दिनों में मन्त्र का पुनः 'जागरण' करे। पुनः 'जागरण' में कम-से-कम १ माला 'जप' के साथ 'होम' भी करे। अधिक कर सके, तो अधिक शभदायी होगा, इसमें सन्देह नहीं।

शाबर मन्त्र-साधना हेतु उपयुक्त स्थान

शाबर मन्त्र-साधना अपने निवास-स्थान के स्वच्छ, शान्त, सुरम्य कक्ष या भाग में करनी चाहिए। अथवा, निवास-स्थान से दूर किसी देवालय, शिवालय, वृक्ष, नदी-तट के सान्निध्य में करनी चाहिए।

शाबर मन्त्र-साधना हेतु वस्त्र, आसन एवं माला आदि

शाबर मन्त्र-साधना के लिए नित्य-कर्म करके स्वच्छ श्वेत या रक्त वस्त्र धारण करना चाहिए। 'आसन' हेतु ऊन या कम्बल का श्वेत या रक्त-वर्णी या पञ्च-वर्णी आसन ले। 'आसन' पर 'सुखासन' में बैठे और 'जप' की नियत संख्या पूर्ण करने के बाद ही 'आसन' से उठे।

अपने सम्मुख, एक पाटे पर नवीन वस्त्र रखकर घी या तेल का 'दीपक' रक्खे। सुगन्धित धूप, अगरबत्ती करे। पुष्प, शुद्ध जल, नैवेद्य यथा - शक्ति रक्खे। यदि सम्भव न हो, तो मानसिक श्रद्धा-उत्साह से करे। अशुद्ध विचारों एवं वाणी पर नियन्त्रण रक्खे। मित-भाषी, मिष्ट-भाषी, मित-आहारी रहे। स्त्री-सङ्ग से दूर रहे। पूर्ण शक्ति, उत्साह, तन-मन-धन एवं प्रसन्न-चित्त से 'जप' करे।

'जप' हेतु अपनी परम्परा में प्रचलित तुलसी-चन्दन-रुद्राक्ष-स्फटिक की 'माला' ले। इस्लामी शाबर मन्त्र-साधना में, सीपियों या हकीक की 'माला' का विधान है। यदि 'माला' न हो, तो मनोअङ्क से निर्धारण करे।

'जप' १०८ दानों की 'माला' से करे। मन्त्र छोटा हो, तो कम-से-कम १००० या बढ़ाकर १०,००० करे। अधिक 'जप' से अधिक लाभ होगा। मन्त्र बड़ा हो, तो १०८ से १००८ 'जप' करे। 'जप' करने की गति न तेज हो, न कम अपितु मध्यम गति से करे। तन्मय होकर 'जप' करे। 'जप' के समय कुछ अजीब - सा दिखाई दे या आवाजें सुनाई दें, तो घबराए नहीं। न ही 'जप' व 'आसन' छोड़े। देव - कृपा से शान्ति हो जाएगी। घर के बड़ों से आज्ञा लेकर, माता-पिता-बुजुर्गों से आशीर्वाद लेकर 'जप' - प्रारम्भ करे व पूर्ण करे। साथ ही, साधु-सन्तों, फकीरों, अनाथ बालकों को यथा-शक्ति दान-दक्षिणा देकर 'जप' करने बैठे।

'जप' के लिए मुँह उत्तर या पूर्व की ओर करके बैठे। इस्लामी साधना में पश्चिम दिशा का महत्त्व है। जब तक पहले से उल्लेख न हो, तब तक दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके न बैठे।

निर्धारित 'जप' पूर्ण करने के बाद विशेष कर्तव्य

'जप' की निर्धारित संख्या पूरी करने के बाद स्वयं के लिए या दूसरों के लिए कल्याण की भावना से 'प्रयोग' करे। दीन, दुःखी एवं समस्या-ग्रस्त लोगों को १ गण्डा देवे, २ भस्म देवे, ३ तावीज में डोरा अभिमन्त्रित कर देवे, ४ भस्म अभिमन्त्रित कर तावीज में देवे, ५ अभिमन्त्रित जल छिड़के या पिलावे अथवा ६ मोर - पङ्ख आदि से झाड़-फूँक करे। जैसी माँग हो, वैसा करे।

लोभ-लालच से बचे। यथा-शक्ति दान-पुण्य करे या कराए। मन्त्र का स्मरण या उच्चारण सभी समय करता रहे। हो सके, तो प्रति-दिन पूजा-पाठ कर साधित मन्त्र का 'जप' करे। किसी को कष्ट देने की भावना से 'मन्त्र' का 'प्रयोग' कदापि न करे। यदि विकलता या क्षोभ दिखाई दे, तो 'आत्म-निरीक्षण' करे।

'शाबर-मेरु-मन्त्र' के जप की आवश्यकता

'शाबर-मन्त्र-साधना' प्रारम्भ करने के पूर्व 'शाबर-मेरु-मन्त्र' का जप आवश्यक है क्योंकि एक सामान्य साधक के पास न तो अच्छे गुरुओं का सान्निध्य होता है, न ही आवश्यक योग्यता। अतः इनके अभाव में 'शाबर-मेरु-मन्त्र' का जप करना आवश्यक है। इसीलिए उक्त मन्त्र 'शाबर'-मन्त्रों का 'मेरु' कहा जाता है। इसके द्वारा सभी अर्थ साधित होते हैं, अतः इसे 'सर्वार्थ - साधक मन्त्र' भी कहते हैं। कहीं-कहीं इसे 'सुमेरु मन्त्र' कहते हैं। यह मन्त्र इस प्रकार है—

गुरु शठ, गुरु शठ, गुरु है वीर। गुरु साहब सुमरों बड़ी भाँत। सिङ्गी टोरों बन कहाँ। मन नाउ करतार। सकल गुरुन की हर भले। घट्टा पकर उठ जाग। चेत सम्भार श्रीपरमहंस॥

'सुमरों' के स्थान पर 'सुमिरौं' अथवा 'सुमरौं' पाठ-भेद है। इसी प्रकार, 'टोरों' के स्थान पर 'पाकर' और 'जाग' के स्थान पर 'जान' पाठ-भेद हैं। ये पाठ-भेद 'शाबर-मन्त्र' की एक विशिष्ट लाक्षणिकता मात्र हैं। साधकों को जो पाठ मुद्रित है, उसी के अनुसार 'जप' करना चाहिए। जप १०८ बार या १००८ बार करे। जप के बाद घृत - युक्त गुग्गुल से आहुति भी दे।

शाबर-सुरक्षा-कवच-मन्त्र

'शाबर - मेरु - मन्त्र' का जप करने के बाद 'शाबर-सुरक्षा-कवच-मन्त्र' का भी १०८ बार जप करना चाहिए। इससे पूर्ण सुरक्षा की प्राप्ति होती है। 'शाबर-सुरक्षा' का एक उत्कृष्ट मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ नमो आदेश गुरुन को, ईश्वरी वाचा। अजरी-बजरी बाडा बजरी, मैं बज्जरी। बाँधा दशौ दुवार छवा। और को घालो, तो पलट हनुमन्त बीर उसी को मारे। पहली चौकी गनपती, दूजी चौकी हनुमन्त, तीजी चौकी में भैरों, चौथी चौकी देव रक्षा करन को आवें श्रीनरसिंह देव जी। शब्द साँचा, पिण्ड साँचा। चले मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

आगे जब किसी प्रकार की शाबर-साधना करे, तब उक्त 'शाबर-सुरक्षा-कवच-मन्त्र' को केवल ७ बार जप कर स्व-देह का स्पर्श करे या फूँक लेवे अथवा जल अभिमन्त्रित कर आस-पास छिड़क लेवे या फिर जल से अपने चारों ओर रेखा खींचे। ऐसा करने से साधना निर्विघ्न और शीघ्र सफल होगी, इसमें सन्देह नहीं।

'शाबर-देह-रक्षा' एवं 'शाबर-आत्म-रक्षा' के दो मन्त्र और हैं। साधक चाहें, तो इनमें से किसी एक मन्त्र का जप कर सकते हैं। केवल ७ बार जप करने से सभी बाह्य एवं आन्तरिक विघ्नों से रक्षा होगी—

शाबर-रक्षा के अन्य मन्त्र

(१) ॐ बजरी - बजरी किंवाड़, बजरी कीलों दशवो द्वार। अम्बरी बडन बजरी खडे, श्रीहनुमन्त वीर रक्षा करे॥

(२) ॐ नमो होलका ठोल, जहाँ डाकी कण्डी हमारा पिण्ड बैठा । ईश्वर कूंची, ब्रह्मा ताला । हमारा पिण्ड काँचा । श्रीहनुमन्त वीर रखवाला ।।

सर्व-अर्थ-साधक 'शाबर-मन्त्र' के अन्य रूप देखने के लिए 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ १० और पृष्ठ ६६-७० देखें । 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ८ भी देखें ।

इसी प्रकार 'शाबर-सुरक्षा-कवच' के अन्य मन्त्रों के लिए 'शाबर-मन्त्र - संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ४६ देखें । देह-रक्षा के लिए 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ३२ देखें । आत्म-रक्षा के लिए 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ १०, २२, ३५ देखें और भाग ५ में पृष्ठ ५६ देखें । किसी भी मन्त्र का उपयोग किया जा सकता है ।

शाबर-मन्त्र को जाग्रत करने की अनुभूत विधि

कभी ऐसा भी होता है कि उचित विधि से शाबर-मन्त्र का प्रयोग करने के बाद भी साधना में सिद्धि नहीं मिलती । ऐसे समय शाबर-मन्त्र को जाग्रत करने की आवश्यकता होती है । शाबर - मन्त्र को जाग्रत करने की अनुभूत विधियाँ इस प्रकार हैं—

(१) एक अखण्ड व बड़ा 'भोज'-पत्र ले । 'अष्ट-गन्ध' ले । 'अष्ट-गन्ध' में 'गङ्गा - जल' या 'गुलाब - जल' मिलाकर स्याही बनाए । 'दाड़िम' की लेखनी से 'भोज-पत्र' पर १०८ बार उस मन्त्र को लिखे, जिसे जाग्रत करना है । यदि मन्त्र बड़ा हो, तो ३-५-७-६-११ बार लिखे । लेखन के साथ-साथ मन्त्रोच्चारण करता रहे । फिर एक पाटे या चौकी के ऊपर नया वस्त्र बिछाए । वस्त्र के ऊपर मिट्टी का नया कलश रक्खे । साथ ही मन्त्र-लिखित भोज-पत्र भी रक्खे । धूप-दीप-नैवेद्य से भोज-पत्र का पूजन करे । पूजन के बाद १०८ बार पुनः मन्त्र का जप करे । ब्राह्मणों को भोजन कराए । गरीबों को दान - दक्षिणा दे । कलश में नया वस्त्र रखकर उसके ऊपर मन्त्र लिखा हुआ भोज-पत्र रख दे । कलश का मुँह बन्द कर दे और उसे बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दे । प्रवाहित करते समय मन्त्र का उच्चारण

करता रहे। विसर्जन के बाद घर आ जाए। श्रद्धा से करे, साध्य मन्त्र का प्रभाव शीघ्र ही फलित होता दिखाई देगा।

(२) शाबर-मन्त्र को जाग्रत करने की द्वितीय विधि 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ३१ में श्रीयुत सुधीर भाई ने प्रस्तुत की है। यह विधि भी अच्छी है। इस विधि में 'असावरी देवी का पूजन' करने के लिए कहा गया है।

उक्त दोनों विधियाँ अच्छी हैं। असफल साधक किसी एक विधि से लाभ उठा सकते हैं। हाँ, यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि साधना की सिद्धि के लिए सतत प्रयत्न-शील रहना अत्यन्त आवश्यक है। साधकों को अपनी - अपनी योग्यता भी दिन-प्रति-दिन बढ़ाना चाहिए। 'जप' करता रहे। इससे ऊर्जा भी बढ़ेगी और बल भी मिलेगा।

शाबर-मन्त्रों की सफलता के लिए ग्यारह अक्षरों का एक 'साधना-रक्षक-मन्त्र-प्रयोग' भी है। इस प्रयोग को किसी भी मन्त्र को सिद्ध करने के पूर्व निम्न-लिखित विधि के अनुसार करना चाहिए—

साधना-रक्षक मन्त्र-प्रयोग

मन्त्र—ॐ नमो सर्वार्थ-साधिनी स्वाहा।

विधि—उक्त ११ अक्षरों के मन्त्र को शुभ मुहूर्त में १००० बार जपे। १ माला जप के साथ 'होम' करे। अथवा ग्रहण - काल में १२,५०० जप कर हवन-तर्पण-मार्जन और ब्रह्म-भोज करे।

फिर आवश्यकता पड़ने पर जब किसी शाबर - मन्त्र का अनुष्ठान करे, तब अपने आस-पास उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित किए हुए जल से रेखा खींच ले। अथवा २७ या १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर जल को अभिमन्त्रित करे और अपने चारों ओर छिड़क ले।

इसके बाद साध्य शाबर-मन्त्र की साधना श्रद्धा-विश्वास से करे। साधना की सभी बाधाएँ तो दूर होंगी ही, साथ ही सफलता भी प्राप्त होगी। अनुभूत प्रयोग है।

शाबर-मन्त्र-कोश

(शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ५)

प्रस्तुत-कर्त्ता—श्री भैरवानन्दनाथ,

शाम्भवी तान्त्रिक शोध संस्थान,

१०८, चकराघाट, सागर—२ (म० प्र०)

अगवार	आगे का, अगला, आगे जाकर स्वागत करने-वाला, अन्न का वह भाग, जो हलवाहे आदि खेती का काम करनेवालों को दिया जाता है
अतरी	आँत, अँतड़ियाँ, इत्र रखने का पात्र
अफला	वृथा, फल-रहित, बन्ध्या, घृत-कुमारी
अरज	प्रार्थना, निवेदन
उपलाय	उठाकर, उठाना
उड़ि	उड़ना
ऊ	वह
ऐठक	ऐंठ, बल, मरोड़, अकड़, गाँठ
ओका	उसे, उसका
ओसारे	दालान, बरामदा
कर नाऊ	हाथ फैलाना, हाथ पसारना
कटि	कमर, शरीर का मध्य-भाग
काबर-देस	कामरू
कौरू कमच्छा	काम-रूप की कामाख्या देवी
खरक	गोशाला, खड़क
गइलन	गया, चला जाना
गदरिया	गद्दी, गुदड़ी, हथेली
गाछ	वृक्ष, पेड़, तरु
गात	देह, तन, शरीर, तनु, अङ्ग
गाँडो	गण्डा, अभिमन्त्रित सूत

गुखुरा	गाय के खुर के समान
गुदरिया	गद्दी, गुदड़ी
घाले	फेंके, डाले, बिगाड़े, उजाड़े, रखे, मारे, पटके
च्याम	चाम, चमड़ी, त्वचा, चर्म
चौगड़ा	खरगोश, शशक, खरहा
चौप्पाशी	चौरासी
जँहवा	जिससे
जाड़ी	दन्त-पंक्ति, मोटी, स्थूल
झल	ज्वाला, आँच, क्रोध, समूह
टोनहिनि	जादू-टोना करनेवाली स्त्री
टोना-टमार	जादू-टोना, अभिचार
ठेसिरी	अभिमानी, नकचढ़ा, घमण्डी
ठैकान	ठिकाना, पता, स्थान, जगह
डइनी	डायन, चुड़ैल
तरुवर	पेड़, वृक्ष
तुरित	तुरन्त, तत्काल, शीघ्र, त्वरित, झटपट
तोहार	तुम्हारा
दइब	देवता, भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, ललाट
दाई	दाता, धात्री, दासी, दाहिन
दिख	दृष्टि, दिशा, सूझ
दीज्यो	दिया, देना, दीजिए
नावो	नमन, झुकना, प्रणत होना
पंछी	पक्षी, खग, चिड़िया, पखेरू
पालटे	पलटे, उलटे
पावई	पावे, पाना
पिछवार	पीछे का, पिछला
पोवै	पोहना, गूँथना, बनाना
पोहोच	पहुँच जाना
फलनवा	फलाना, अमुक
फलनिया	फलानी, अमुकी
बलाय	मुसीबत, परेशानी, दिक्कत

बिस	विष, गरल, जहर
बिखिया	बिच्छू, वृश्चिक
बले	जले
भजकड़ा	भजन करनेवाला.
माँह	मध्य, बीच, अन्तर
याम	पहर, प्रहर, तीन घण्टे का समय
रुँधा	रुका, बँधा
रिसाय	रूठना, क्रोधित होना
लण्डी	रण्डी, वेश्या, पतुरिया, गणिका
साम	शाम, सन्ध्या, तीसरा वेद (सामवेद), मूसल या लाठी के सिरे पर लगाया जानेवाला लोहे का छल्ला
सेधुर	सेन्धुर, सेन्दुर, सिन्दूर
सोबत	सो रहा
हाड़	हड्डी, अस्थि
हिया	हृदय, कलेजा

['शाबर मन्त्र-कोश' प्रस्तुत करने की बड़ी आवश्यकता है। खेद है कि इस ओर इने - गिने बन्धुओं का ध्यान गया है। प्रस्तुत भाग में गुजरात, म० प्र०, बिहार, हि० प्र०, हरियाणा, राजस्थान, महा-राष्ट्र आदि विविध प्रदेशों में प्रचलित 'शाबर मन्त्र' संगृहीत हैं। स्पष्ट है कि इन मन्त्रों में उक्त प्रदेश की 'लोक-भाषा' के कितने ही शब्द समाविष्ट हैं, जिनके अर्थ अज्ञात हैं। ऐसे शब्दों के अर्थ उन लोक-भाषाओं के जानकारों को लिखकर अवश्य भेजने चाहिए। इससे 'शाबर-मन्त्र-कोश' को प्रामाणिक रूप में प्रकाशित करने में सहायता मिलेगी। इस भाग में श्री भैरवानन्दनाथ जी (मध्य प्रदेश) एवं श्री सूरज सारस्वत जी (हिमाचल प्रदेश) ने 'शाबर मन्त्र-कोश' लिखकर भेजने की कृपा की है, जिसके लिए वे प्रशंसनीय हैं। उन्हें हार्दिक धन्यवाद।—सं०]

बंगाल के कुछ सिद्ध साबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता—श्री विश्वनाथानन्दनाथ

श्री महा-काली शिव-शक्ति दरबार

भटमुरना, पो० कतरासगढ़, जिला धनबाद (बिहार)

१. सर्प-वशीकरण मन्त्र

ॐ रींग रींग, रोख्यो रोख्यो, बामन्ते-बामन्ते, तोरू-तोरू, बसुमान्य-बसुमान्य स्वाहा।

विधि—यह 'सर्प-वशीकरण-मन्त्र' है। कैसा भी सर्प हो, किसी भी जाति का हो। किसी भी रङ्ग का क्यों न हो, यदि वह घर में है या रास्ते में, खेत - खलिहान में मिल जाए, तो मिट्टी उठाकर उक्त मन्त्र सात बार पढ़कर सर्प के ऊपर मिट्टी को फेंक देने से सर्प वश में हो जाता है। उसका क्रोध शान्त हो जाता है तथा वह किसी का अनिष्ट नहीं करता। मन्त्र पढ़कर मिट्टी फेंकनेवाले मनुष्य की बात को वह आज्ञाकारी सेवक के समान मानता है। ऐसा व्यक्ति अगर उसे घर, आँगन या खलिहान से चले जाने का आदेश देगा, तो वह चला जाएगा।

२. सर्प को घेरे में बाँधना

रामचन्दो जखोन कटक - बन्धन करीलो, जय नेगुड़ दिए हनुमान कुण्डली दिलो, कुण्डली-कुण्डली जिभेरे तोर मुण्डली, जोलो स्थोले नाँय रे तोर वास, सधर्मे सापन्या शमेर कुण्डली नाँय होइस पार, कार आज्ञाय—सीता श्रीरामेर आज्ञाय बाँधा थाक।

विधि—कैसा भी विष-धर सर्प क्यों न हो, उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए उसके चारों ओर घूम कर किसी भी लकड़ी से धरती में घेरा बना दिया जाए, तो उस गोल घेरे से वह सर्प तब तक बाहर नहीं जाएगा, जब तक मन्त्र से घेरे को काटा नहीं जाएगा। यदि घेरे में उसे छोड़ दिया जाए, तो वह जब तक जिन्दा रहेगा, तब तक बाहर नहीं निकलेगा, किन्तु घेरे में उसे बाँधकर मरने के लिए छोड़ नहीं देना चाहिए। यह महा-पाप है तथा मन्त्र का अपमान है।

३. सर्प-मुख-बन्धन-मन्त्र

माँ गो मनोशा, केनो मुनीरा आस्ति केर दुहाई बेत ना मिलीबी आर, जोदि बेत लाड़ूस-चाड़ूस जीह्वा बार करूस, तबे आस्तिक मुनीर माथा खास ॥

विधि—हाथ में एक चुटकी धूल या मिट्टी लेकर सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर सर्प के ऊपर फेंके। सर्प का मुँह बन्द हो जाएगा। न वह मुँह खोलेगा, न जिह्वा बाहर निकालेगा। काटने का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि मुँह बाँध कर अधिक दिनों तक छोड़ दिया जाय, तो वह भूखा-प्यासा रह कर मर जाएगा। अपना बन्द मुँह नहीं खोलेगा। इस तरह मुँह बाँध कर किसी सर्प को मरने के लिए छोड़ नहीं देना चाहिए। यह पाप है और ऐसा करने से मनुष्य नर्क में जाता है।

४. सर्प का विष दूर करना

(क) गौरिर स्मरने विष के हरी, विष के डाकी छेन पोद्या कुमारी। ॐ-कारे डाकी छेन पोद्या कुमारी। पाताले डाकीछेन वासुकी माँ। जोदि ना भोस्स जाबी, तोबे शिवेर माथा खाबी। हर विष···हर नमः शिवे हर नमः शिवे ॥

(ख) आकुल होयेछेन माँ गो विषेर भोरे, झटकोरे अे रे विष चल पाताले। तोमा के डाकीछेन माँ गो आद्धेर विष-हरि। अइ मन्त्र सुने विष, जोदि थाको गाए, शिव सापन्त कोरेछेन शिघ्र पाताले जाय। हर विष -हर नमः शिवे हर नमः शिवे ॥

(ग) ॐ मनोसा देवी, ॐ अस्ति कसोब्य मुने मारता, भोगीनी बासुकेस्यता जोरूतकारू मुनीर पोतनी मनोसा देवी नमोऽस्तु ते। ॐ मनोसा-देव्यै नमः ॥

विधि—सर्प-विष दूर करने के लिए उक्त तीनों मन्त्रों को पहले अच्छी तरह याद कर लेना चाहिए। याद करने के बाद, नाग-पञ्चमी या भाद्र अमावास्या के दिन इन मन्त्रों से एक हजार आठ बार हवन करना चाहिए। घी और बिल्व-पत्र से हवन करे। फिर जब किसी को सर्प काट ले और विष उसके शरीर में चला जाए, तो उक्त मन्त्रों को पढ़कर नीम की डाल से सिर से पैर तक झाड़े। झाड़ते समय मन्त्र

पढ़ता जाए और नीम की डाल को पत्तियों समेत रोगी के सिर से पैर तक स्पर्श कराए। ऐसा करने से सर्प का विष दूर हो जाएगा और रोगी अच्छा हो जाएगा। शरीर से विष दूर हो जाने के बाद रोगी को स्वच्छ ठण्डे जल से स्नान कराए और उसे दही-भात खाने के लिए दे। 'प्रयोग'-कर्त्ता को स्वार्थ में नहीं पड़ना चाहिए। रोगी के घर में जल भी नहीं पीना चाहिए। अन्यथा मन्त्र की शक्ति क्षीण हो जाती है।

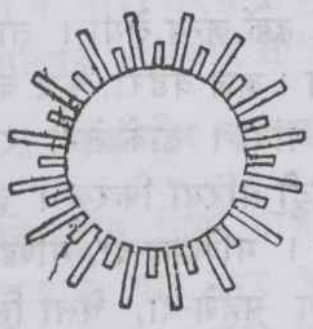

भद्र-काली का शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीयुत भूपेन्द्रदत्त शर्मा

षोडशी ज्योतिष पीठ, १४५ नया बाँस,
नदी रोड, मुजफ्फरनगर-२५१००२

ॐ सिंहादुत्थाय कोपाद् धधड्-धड्-धडा धावमाना भवानी शत्रूणां शस्त्र-पाते ततड्-तड्-तडा त्रोटयन्ती शिरांसि। तेषां रक्तं पिबन्ती घुघुट्-घुट्-घुटा घोटयन्ती पिशाचान् तृप्तास्तृप्ता हसन्ती खखल्-खल्-खला शाम्भवी वः पुनातु ॥

विशेष—उक्त मन्त्र 'शाबर - मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ६८ पर प्रकाशित है। हमारे पास प्राप्त पाण्डुलिपि में दूसरा मन्त्र दिया गया है, जो ऊपर प्रकाशित है। एक अन्य पाण्डुलिपि में भी यह मन्त्र दिया गया है, किन्तु उसके अन्त में निम्न श्लोक भी है—

उग्र-चण्डा प्रचण्डा च, चण्डोग्रा चण्ड - नायका। चण्डा चण्डवती चैव, चण्ड-रूपाति-चण्डिका ॥

परीक्षित शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सूरज सारस्वत
बडोटी, पो० रैल, हमीरपुर (हि० प्र०)

१. 'रक्षा-पाल' का मन्त्र

माता भेखलिया दे ढकें जन्म लेया। ताम्ब कुण्डें सिङ्ग लेया। बारह माह खेल खिलाया। अज वडेरा, कल वडेरा, पत्थया पत्थाया। घुंघयां सरलियां जोतां गांदा। ढाकें तेरी रम्भी विराजे, सिरें तेरें लम्बा टोप विराजे, पिट्ठी तेरिया किरलू। हत्थें तेरें नरेलू सोहन्दा, चिट्टा चोला लम्बा डोरा। मण्डिया-दा, मण्डियाल कुल्लेए-दा, कोली चम्वे-दा, चम्वलाय मणि महेशे-दा, चेला सिमरिया ओखिया वेला दर्शन देने गुरु मेरे। मेहरा दिया घडिया औणा। सदेयां औणा भेजेयां जाणा, मैं बार-बार गुलाम तेरा।

विधि—१ जल, २ गन्ध, ३ अक्षत, ४ फूल, ५ धूप, ६ ज्योति, ७ नैवेद्य के रूप में हलुवा और ८ हाथ से काता हुआ सूत—यह आठों सामग्री लेकर रात्रि एक प्रहर बाद (सबेरे तीन और चार बजे के बीच) पीपल के वृक्ष के नीचे जाए। पीपल के चारों तरफ प्रदक्षिणा कर जल दे। जनेऊ के रूप में तीन धागे पीपल के चारों ओर बाँधे। पत्तों पर 'पूजन'-सामग्री रखे। धूप-ज्योति जलाए। फिर गुरु व गणेश जी का सुमिरन करके पीपल के नीचे एक माला जप करे। 'जप' के बाद ज्योति लेकर घर वापस आ जाए और अपने पूजन - कक्ष में पूजनोपरान्त फिर एक माला 'जप' करे। रविवार के दिन सुबह-शाम घर पर दो माला 'जप' करे। ४१ दिन के भीतर ही 'रक्ष-पाल' प्रकट होकर 'वर' प्रदान करते हैं।

२. 'रक्षा' के मन्त्र

(१) वज्र ओढूं, वज्र पहनूं, वज्र लैणा थल्लें बिछाई। वज्र की वणी चौखण्डी, चारों तरफ समुद्र की खाई। वजरङ्ग वीर की चौकी, राजा रामचन्द्र की दुहाई।

(२) वज्र बाँधों, वज्र-तार बाँधों, दूत-भूत के छाया। वज्र बाँधों अपनी काया। बाँएँ नरसिंह, दाएँ हनुमन्त। पीछे हनुमन्त, आगे काली। सब देवता करें रखवाली। नौ नाथ चौरासी सिद्धन की दुहाई फुरे।

विधि—पहले ग्रहण अथवा होली या दिवाली के अवसर पर उक्त मन्त्र को एक हजार जप कर सिद्ध कर ले। फिर 'प्रयोग' करते समय मन्त्र पढ़कर रोगी के चारों तरफ चाकू से रक्षा का घेरा बनाए। इससे सभी प्रकार के तान्त्रिक अभिचार से 'रक्षा' होती है।

३. पञ्च-पीर का मन्त्र

बिस्मिल्लाह रहमाने रहीम, मियाँ गाजी पीर, जिन्द पीर खवाजा खिज्र पीर, शेख फ़रीद पीर, पीर बदर घोड़े पर भीड़ चढ़ो, मदद मेरी पञ्ज करो। जो मेरा काम न करो, तो मुहम्मद रसूल अल्लाह की दुहाई।

विधि—वीर-बार (रवि-वार) के दिन, शुक्ल पक्ष की द्वितीया में सूर्यास्त के बाद पश्चिम की तरफ मुंह करके हकीक की माला से उक्त मन्त्र का 'जप' करे। तेल का चौमुखा दिया जलाए, जिसमें चारों तरफ चार बत्तियाँ तथा बीच में एक खड़ी बत्ती हो। 'प्रसाद' के रूप में देशी घी और शक्कर से बना चूरमाँ रक्खे। लोहबान का 'धूप' जलाए। इक्कीस दिन तक प्रति-दिन एक माला 'जप' करे।

४. रक्षा-कारी अहमद पठान का मन्त्र

काठ का घोड़ा, काठ का पलाण, उस पर चढ़ेया अहमद पठान। नौ सौ पलटण आगे चले, नौ सौ पलटण पीछे चले। नौ सौ पलटण दाएँ चले, नौ सौ पलटण बाँएँ चले। साथ में अहमदा पठान चले। समुद्र बन्द कर, नदी-नाले बन्द कर। राह - चौराह बन्द कर। मड़ी मसानी बन्द कर। नौ नाहर सिंह, चौदह डेरे बन्द कर। बत्तीस भूत, छत्तीस बलियाँ बन्द कर। बूंजा वीर, चौंसठ जोगन बन्द कर। अस्सी मसान, नब्बे भैरों बन्द कर। नौ नाथ, चौरासी सिद्ध बन्द कर। किस्सा कराया बन्द कर। नौती-धोती बन्द कर। रण्डी - सुहागन का

मन्त्र बन्द कर। बारह जाति का मन्त्र बन्द कर। नेगुरे - बेईमान का मन्त्र बन्द कर। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूँ अहमदा पठान, तेरे इल्म चोट का तमाशा।

विधि—किसी अच्छे मुहूर्त में, किसी लम्बे-चौड़े मैदान में, जिसमें कोई वृक्ष न हो—वीरान साफ - सुथरी जगह में बैठ कर उक्त मन्त्र का एक माला 'जप' २१ दिन तक करे। आँधी - तूफान आए, तो डरे नहीं। अपने पास कपड़ा बिछाकर लोहबान का धूप, बूँदी का प्रसाद, लौंग तथा एक काला तहमद रक्खे। मन्त्र सिद्ध होने के बाद 'रक्षा'-कार्य में विभूति, डोरा, जल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके दे।

५. अभिचार-विपरीत चालन मन्त्र

(१) चण्डी-चण्डी महा-चण्डी, आवत मूठ करे नव-खण्डी। अष्टा-दश-भुजा, शस्त्र-धारी। हाकिनी - डाकिनी घेर मारी। जादु - टोना, टोटका मोहे न सतावे, जहाँ से आया वहीं को जाए। जिसने भेजा, उसको खाय। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूँ माई चण्डिके, तेरे इल्म का तमाशा।

(२) काला कलवा, चौंसठ वीर। मेरा कलवा मङ्का तीर। चलत वाण मारूँ, उलट वाण मारूँ। जहाँ को भेजूँ, तहाँ को जाए। मांस-मच्छी को छुओ न जाए। जिसने भेजा, उसको खाय। हमको फिर न सूरत दिखाए। दुशमन के हाथ को, पाँव को, नाक को, कान को, सिर को, पीठ को, कमर को, जितना जोखिम पहुँचा सको, उतना पहुँचावो, नहीं तो माँ का चूसा दूध हराम कहावे। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। चले मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—उपर्युक्त मन्त्रों को पहले होली - दिवाली या ग्रहण के समय एक हजार बार 'जप' कर सिद्ध करे। फिर आवश्यकता पड़ने पर मन्त्र पढ़कर मद्य की आहुति अग्नि में देने से पर - कृत अभिचार का विपरीत-चालन होता है और शत्रु को ही नुकसान होता है।

६. जङ्गी माता का मन्त्र

आई जङ्गी, गई फिराकी। मद पिए, मांस खाए, काली कहाए। भरी कड़ाही, लङ्का डाई, जहाँ धुआँरोल मचाई। चौकी वणी हनुमान की, राजा रामचन्द्र की दुहाई।

विधि—पीपल के वृक्ष के नीचे जल, गन्ध, फूल, बताशे, धूप, गूगल, गाय के घी की ज्योति तथा काँसे का एक साफ खाली कटोरा रखकर उक्त मन्त्र की एक माला, सायं एक प्रहर रात्रि के बाद, २१ दिन तक 'जप' करे। जिस दिन अग्नि की बहुत बड़ी ज्वाला-सी आती दिखाई दे और उसके बीच छाया-सी दिखाई दे तथा वह पास आकर जब आवाज दे, तो 'जप' को बीच में रोककर कहे कि फलाँ व्यक्ति ने बकरियाँ पाली हैं, वहाँ से अपनी मन - पसन्द की बकरी भेंट ले ले। यदि बकरी स्वीकार कर ली जाए, तो मन्त्र सिद्ध हो गया। लोक-भलाई के लिए मन्त्र का 'प्रयोग' करे। मन्त्र-साधना गुप्त रक्खे।

७. रोड़का काली का मन्त्र

सोने की सङ्गली, रूपे की कड़ी। ले माई, कड़क कालका खड़ी। गुरवन्ती - गुरदन्ती, गुर के छुटे ढाई वाण। फुटे लहु, चले मसाण। ढाईयाँ घड़ियाँ-दी औणी करिकें औए, ताँ रोड़का कहाए। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूं रोड़का, तेरे इल्म का तमाशा।

विधि—ऐसे श्मशान - घाट के पास, जहाँ नदी बहती हो, वहाँ नदी के किनारे बैठकर उक्त मन्त्र को जपे। मांस, मद्य तथा आटे का पेड़ा पास रक्खे। २१ दिन तक एक माला 'जप' करे। आते समय सभी सामान को जल में प्रवाहित कर दे। अच्छे और बुरे दोनों कार्यों के लिए 'प्रयोग' होता है।

८. उच्चाटन-शान्ति-करण मन्त्र

गोरा भैरब, किल-किल करे। काला भैरों हँसे। दोहाई मुहम्मदा पीर की। मेरा मित्र अपने घर बसे।

विधि—यह मन्त्र 'शाबर-मन्त्र - संग्रह', भाग ४, क्रमाङ्क ४६ (पृष्ठ ३४) के पहले मन्त्र का 'काट' (प्रत्युपचार) है। साधन - विधि समान है।

९. तान्त्रिक बाधा-नाशक भैरव-मन्त्र

ओम आदि-भैरव, महा-भैरव, काल-विकराल भैरव, प्रचण्ड, अति-प्रचण्ड भैरवाय हुं फट् स्वाहा।

विधि—काल-रात्रि, दिवाली, भैरवाष्टमी इत्यादि से प्रारम्भ कर दस दिन 'जप' करे। रात्रि ग्यारह बजे से तीन बजे तक 'जप'

करे। दस दिन में १०८ माला 'जप' करे। ग्यारहवें दिन उड़द की दाल के बड़ों और मद्य से दशांश हवन करे। लौंग, इलायची, जायफल, धान की खिल्लां (लावा), भूंजा चना, शहद, गङ्गा-जल, खट्बाङ्ग, दो नारियल के खप्पर, दो मीठे रोट, दो लगे हुए पान—यह सामग्री अपने पास रक्खे प्रति-दिन सामान बदल दे।

१०. गाय-भैंस की दुग्ध-वृद्धि हेतु मन्त्र

वग्गी विल्ली, लोहा पाखर। गुरां सिखाए, ढाई आखर। ढाई अखरां—दा एह स्वभाओ। ना घटे दुध, ना जाए घियो। सोने दी चाटी, रूपे दी मदानी। दुध रिड़के, गौरजाँ रानी। गौरजाँ रानी, पाया फेरा। इस गाय-मझी-दा दुध घियो मेरा। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूं गौरजाँ, तेरे इल्म का तमाशा।

विधि—बहती नदी के किनारे २१ दिन तक उक्त मन्त्र का एक माला 'जप' करे। आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को खिलाए। फिर आवश्यकता पड़ने पर विभूति बनाकर पशु को लगाए। कुछ पानी इत्यादि में पशु को खिलाए।

११. थनैली-रोग का मन्त्र

उच्ची लम्भी चौकड़ी, भैरों गाय चराय। दुद्धी अपनी ठाकां, पीड फलानी की जाय। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। चले मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—ग्रहण, होली या दीवाली के समय उक्त मन्त्र एक हजार 'जप' कर सिद्ध कर ले। किसी स्त्री को स्तन में दर्द हो, तो उससे उलटी दिशावाले अपने स्तन पर विभूति से उक्त मन्त्र द्वारा झाड़ने से उस स्त्री को आराम आ जाएगा।

१२. वशीकरण मन्त्र

मारुए देश च बसदी काली, महा-काली सङ्ग में रहन्दी। गरियां खांदी, छुआरेयां खांदी। खूहें पन्यादें वसदी काली माई। उच्चेयां पिप्पलें वासा तेरा। मालतियां देयां बूटेयां वसदा, नारसिंह वीर मेरा। सङ्ग वसदी काली-माई। भूमक तेरिया वीणी अमुकी को जगावे, बैठी कोउठाए, तुरत हमारी सेज पर लयांए। ना आए, तो फूट काकड़ी

कालेजा मर जाए । गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति । चले मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि—पीपल के नीचे इक्कीस दिन तक एक माला 'जप' करे। सुगन्धित फूल, इत्र, गरी, छुआरे पास रक्खे। मन्त्र सिद्ध होने पर फूल, इत्र या गरी अभिमन्त्रित करके साध्य को देने से 'वशीकरण' होता है।

१३. कीलक मन्त्र

जमीं कीलों, आसमान कीलों, सर्व-कीलों। तेरा बाबा माई कीलों, तेरा ताऊ ताई कीलों। जिन तू गोद खिलाया कीलों। तेरी बहिन भानजी कीलों। जिन सङ्ग तू खेला-खिलायां कीलों। तेरी राह - वाट, जहाँ से तू फिर आया कीलों। कीलों तेरी ताल पोखरी, जहाँ से जल पी आया। दुहाई गोरखनाथ की। रानी कज्जरा के श्राप मारे जाओ, जो फिर मुँह फैलाओ।

विधि—ग्रहण इत्यादि में उक्त मन्त्र १००० बार 'जप' कर सिद्ध कर ले। फिर भूत-बाधा-ग्रस्त व्यक्ति के ऊपर नींबू में मन्त्र से कील ठोकने से लाभ होता है।

१४. बन्दूक-पिस्तौल-बन्धन-मन्त्र

इन्द्र की कूची, ब्रह्मा की तड़ी। रक्षा करे देवक सारी। आगे चले कतरसेन, पीछे चले गोरखनाथ का वाण। न घाव फूटे, न लहु छूटे। सुलेमान पीर पैगम्बर की दुहाई। मेरे मन्त्र से वज्र-वाण न चले।

विधि—पहले उक्त मन्त्र को दस हजार बार 'जप' कर सिद्ध करे। बाद में बन्दूक या पिस्तौल की तरफ देखते हुए मन्त्र से फूँक मार देने से बन्दूक-पिस्तौल इत्यादि बन्द हो जाते हैं, काम नहीं करते।

१५. रुद्राक्ष का मन्त्र

ओम सोहम् गिरनार की छाया। शिव पार्वती ने कल्प - वृक्ष लगाया। मुख ब्रह्मा, मध्य विष्णु, लिङ्गाकार महेश्वरा। सर्व - देवता करें पूजा, रुद्र-देवता नमोऽस्तु ते॥

१६. बिच्छू के विष को झाड़ने का मन्त्र

(१) सतां समुद्रां, पार काली गा। कालिया गाई, किता गो आ। विचों निकलिया, बिच्चू लोहा। बिच्चुएँ लोहें, किता डङ्ग। सत डङ्ग

सतारह जातीं। मैं जाणा, बिच्चुआ तेरियां जातीं। सोने दी सिल्ल, रूपे दा बत्ता। पणेया बिच्चुआ, तेरा मत्था। दिखी बिच्चुआ तेरी दरड़। विष उतरदा जाए सरड़ - सरड़। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति, मन्त्र फुरे॥

१७. बिच्छू का विष दुबारा चढ़ाने का मन्त्र

बिष चढ़दा जाए, सरड़-सरड़। मैं नीं दिखी बिच्चुआ तेरी दरड़। सोने - दी सिल्ल, रूपे - दा बत्ता। मैं नीं पन्नेयां बिच्चुआ तेरा मत्था। कितने तेरे डङ्ग, कितनी तेरियां जातीं ? मैं ना जाणां, तेरे डङ्ग ना तेरियां जातीं। विष चढ़या जाए, सरड़-सरड़।

विधि—ग्रहण-काल में उक्त मन्त्र को एक हजार बार 'जप' कर सिद्ध कर ले। फिर नीम की डाली से झाड़ने पर विष उतर जाता है। इसी तरह क्रमाङ्क (१७) के मन्त्र को पढ़ने से फिर चढ़ जाता है।

विशेष—उपर्युक्त सभी मन्त्र मैंने साधु, महात्माओं और तान्त्रिकों से समय-समय पर प्राप्त किए हैं। सभी मन्त्र मेरे व मेरे परिचित व्यक्तियों के द्वारा परीक्षित हैं। किसी भी मन्त्र को 'प्रयोग' करने से पूर्व सिद्ध करना आवश्यक है। उच्च स्थिति-प्राप्त साधक, इन्हें बिना सिद्ध किए ही 'प्रयोग' में ला सकते हैं। सिद्धि के लिए किसी शाबर-मन्त्र-साधक अथवा अपने श्रीगुरुदेव की अनुमति व निर्देश आवश्यक है। किसी का अहित करने के लिए इन मन्त्रों का 'प्रयोग' कदापि न करें अन्यथा उसके दुष्परिणाम के लिए साधक स्वयं उत्तरदायी होगा।

शाबर मन्त्र-कोश

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ढकें	निकट	पत्थया-पत्थाया	प्यार से दबाना
सिंग	सिंगी	गुरवन्ती	गुरु-मुख शिष्या
बडेरा	बड़ा	गुरदन्ती	गुरु-मुख शिष्या
घुंघयाँ सरलियाँ	उल्टी-सीधी	आखर	अक्षर
जोतां गांदा	गीत गाना	जातीं	जातियाँ
नरेलू	छोटा हुक्का	सरड़-सरड़	जल्दी-जल्दी
चिट्टा	सफेद	दरड़	रगड़ा
औखिया	कठिन	पणेया	तोड़ा

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
बेला	समय	डङ्ग	डङ्क
सदेयाँ	बुलाने पर	विच्चु	बिच्छू
पञ्ज	पाँच	गोआ	गोबर
पलटण	सेना	गा	गाय
फिराकी	घूमने-फिरनेवाला	भूमक	नकली फूल
डाई	बिछाना	ढाकाँ	इन्कार करना
पाखर	तालाब	गरयाँ	नारियल-खोपरा
घियो	घी	सङ्ग	साथ
चाटी	बिलोने का बर्तन	वूटा	वृक्ष
रिड़के	विलोना	पन्यादें	पानी का स्रोत
मझी	भैंस	खूहें	कुआँ
लम्मी	लम्बा	वसदी	रहना-बसना
किरलू	पीठ पर लटकाई जानेवाली लम्बी टोकरी		
डोरा	कमर से लपेटा जानेवाला ऊन का रस्सा		
वीणी	स्त्रियों के बालों की चोटी		

दो सिद्ध शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'वैद्य' पं० काशीप्रसाद शुक्ल
अठसराय, प्रयाग-राज (उ० प्र०)

१. आसो देवी का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू का। आसो माता कहाँ से आई ? लाल घाटी के लाल नदी के लाल जलाल को साथ लाई। मरघट के मशान को लाई। घाट के घटिया को लाई। जगवा बीर व चौसठ योगिनी को लाई। एरानी मेरानी को डूडी सूखी। मेरानी को चार कोट। चौकड़ी को लाई। आकाश तोड़, पाताल फोड़। धूलम धूल उड़ाती आई। जाएगी खन-खनाती, आएगी खिलखिलाती। आधा घण्टा या पन्द्रह मिनट में मेरा काम नहीं करेगी, तो अपने बेटे व बहन का मांस खाएगी। नहीं तो आसो माता नहीं कहलाएगी।

विधि—काले उड़द ११, लौंग ६ जोड़ा, काली राई सामने रख-कर ४१ दिन तक ४१ बार उक्त मन्त्र जपे। आखिरी दिन आसो माता आएगी, शुद्धि और तीर्थ माँगेगी।

२. आकर्षण हेतु महिषासुर का मन्त्र

हार को तार चले। सूर को वीर चले। महिषासुर चार पावना। आकाश उताले। पाताल उताले। सींगडे को मार दे। मशान जाए। कारो कर को घेरै। वेरो वेर को घेरै। एगान बाँधूँ। बागान बाँधूँ। चार खूंटनो को बाँधूं। याको नहीं काटो। या ताको लेके नहीं आवे, तो महिषासुर वावो वीन नहीं कहावे।

विधि—वेनउरा खरी, सफेद चन्दन चूरा, काली उड़द की धूनी देकर १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' ४१ दिन तक करे। धूनी देता रहे। ४१ दिन के बाद तीन दिन 'जप' न करे। फिर दो दिन 'जप' करे। दो दिन 'जप' के बाद चन्दन का भैंसा बनाए और उसे 'तीर्थ' पिलाए। लहसुन की सात कली उसके पेट में डाल दे और लाल टून शिर में बाँधे रहे और कहे कि—'ले तेरा चोला मैंने लिया।' इसके बाद चन्दन का महिषासुर, मद्य, अण्डा लेकर नदी किनारे जाए। जल में महिष को धो डाले। अण्डा फोड़कर उसमें मद्य डाल दे। इस प्रकार विसर्जन करे।

दो अचूक एवं गुप्त प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीमती किरन मित्तल

पत्नी श्रीयुत धर्मवीर शास्त्री, 'भगवती भवन'
ग्राम कसार, पो० बहादुरगढ़, जिला रोहतक (हरियाणा)

१. भूत-प्रेत आदि को दूर करने का प्रयोग

काली-काली कङ्काली। दोनों हाथ बजावै ताली। जा बैठी पीपल की डाली। चाबै पान पीक मारी। बीर और लौंग हुए आगवानी। इनके बीच कून चलेगी—कालखा रानी। छप्पन कलवे, बावन वीर, एक नाहरसिंह, पाँचों पीर। इनके बीच कून चलेगी—मर-घट की मसानी। मेरा काम नहीं बनावैगी, तो सौ गऊओं की हत्या करनी पड़ेगी। कन्या - कुँवारी की मारी पड़ेगी। तूनादें - चमारी की मारी पड़ेगी। तापा नै सण्डासी की मारी पड़ेगी। बारा बिनासपति भैरू की मारी पड़ेगी। जसवन्ती जस करती आई। ओपरे - पराये को भखती आई। अपनी काँ रखती आई। फिरै मन्त्र, ईश्वर वाचा। देखूँ हनुमान हकीम, तेरे शब्द का तमाशा।

विधि—होली, दिवाली या ग्रहण-काल में उक्त मन्त्र को १०८ बार 'जप' कर सिद्ध कर ले। आगे भी 'जप' करता रहे, जिससे सिद्धि बनी रहे। 'प्रयोग' के समय भभूत, काले उड़द या काली मिर्च पर मन्त्र पढ़कर मारे।

२. सिद्ध सैय्यद मियाँ पहलवान प्रयोग

बिस्मिल्ला रहीमान रहीम। अमरोहा शहर अजब खाना। जहाँ थान - मकान, वहाँ शेख सिद्ध का आना। जहाँ मियाँ जी की चौकी तक्त लगाई, वहाँ मियाँ जी की चौकी आई। काला बकरा, लौंग, सुपारी। ये मियाँ जी, भेंट तुम्हारी। आसो के लाडले, पहाड़ी के पोते, चले को बाँध। चढ़ाऊँ को बाँध। चुनचुट को बाँध। जिन्द को बाँध। मसान को बाँध। देव को बाँध। दाने को बाँध। नजर को बाँध। खवाजर को बाँध। ३६ कौम की विद्या को बाँध, बाँध, बाँध। हजार

नाजर न करे, तो अपनी माता का दूध हराम करे। बिस्मिल्ला रही-मान रहीम।

विधि—उक्त मन्त्र का ४० दिन तक १०८ बार 'जप' करे। 'जप' करते समय घी या तेल का दीपक जलाए। लोबान की धूनी और अगरबत्ती भी जलाए। दीपक के तेल का 'प्रयोग' कहीं अन्यत्र न करे।

शाबरी मन्त्र श्रीहनुमान जी

प्रस्तुत-कर्त्ता : तन्त्राचार्य डा० जगदीशशरण विलगइयाँ

'श्रीचामुण्डा महा-शक्ति-पीठ', दतिया (म० प्र०)

ॐ नमः बज्र का कोठा, जिसमें पिण्ड हमारा पैठा। ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्मा का ताला। मेरे आठों याम का यती हनुमन्त रखवाला।

विधि—ग्रहण-काल के समय किसी हनुमान मन्दिर या घर पर श्रीहनुमान जी के चित्र के सामने कुश अथवा लाल ऊन का आसन बिछावे और उत्तर की ओर मुख कर बैठे। १ धूप, २ दीप, ३ चन्दन, ४ अक्षत, ५ प्रसाद रखकर पूजन करे। ग्रहण - काल में कम-से-कम १ माला का 'जप' कर सिद्ध कर ले। 'माला' तुलसी या रुद्राक्ष की ले। पूजन कर 'जप' करे। होली, दिवाली, नवरात्रि एवं अन्य शुभ पर्वों पर एक माला 'जप' इसी तरह करता रहे। जब भी घर से बाहर निकले, २१ बार मन्त्र पढ़कर अपनी छाती पर फूँक मारे। किसी कार्य-वश बाहर जाए, तो यही करे। साथ ही कार्य पूरा करने की श्रीहनुमान जी से 'प्रार्थना' करे। जिन साधकों का इससे कार्य पूरा हो, वे 'चामुण्डा महा-शक्ति-पीठ' दतिया (म० प्र०) के पते पर पत्र अवश्य लिखेंगे, जिससे दूसरे साधकों को भी विश्वास हो सके।

●●●

आजीविका-दायक मन्त्र

संग्रह-कर्त्ता : श्रीयुत चन्दूलाल गण्डालाल शाह

ताक-फरी, बनियावाड, जामनगर (गुजरात)

(१) ॐ नमः काली - कङ्काली - महा - काली। मुख सुन्दर, जिए ब्याली। चार वीर, भैरो चौरासी। बीततो पूजूँ, पान-ए-मिठाई। अब बोलो, काली की दुहाई।

विधि—प्रातः-काल ७ बार या ४९ बार पूर्व की ओर मुख कर जपे। काम - धन्धा की खोज भी करे। कुछ ही दिनों में काम - धन्धा मिलेगा।

(२) काली-कङ्काली-महा-काली। मरे सुन्दर, जिए काली। चार बीर, भैरूँ चौरासी। तब तो पूजूँ, पान - मिठाई। अब बोलो, काली की दोहाई।

विधि—प्रति - दिन ४९ बार 'जप' करे। ४९ दिन तक 'जप' करे। श्रद्धा से करने पर काम-धन्धा मिलता है। अनुभूत है।

(३) काली-कङ्काली-महा-काली। सकल सुन्दरी, जीहा ब्हालो। चार विर, भैरव चौरासी। तदा तो पूजूँ पान - मिलाई। अब बोलो, काली की दुहाई।

विधि—नित्य-कर्म के बाद ४९ बार 'जप' करे। धूप, दीप रक्खे। काम-धन्धा मिलेगा या व्यापार में वृद्धि होगी।

(४) ओम काली-कङ्काली-महा-काली। सर्व सुन्दरी, जिए व्हाली। चार वीर, भैरूँ चौरासी। तण तो पुञ्जुँ, पान - मिठाई। अब बोलो, काली की दोहाई॥

विधि—नित्य-कर्म से निवृत्त होकर, धूप-दीप देकर प्रति - दिन १ माला जप करे। जब तक काम न मिले, तब तक 'जप' करे। काम-धन्धा मिलेगा या व्यापार में वृद्धि होगी, विश्वास से करे।

(५) काली - कङ्काली - महा - काली। मुख सुन्दर, जिए ज्वाला। बीर-बीर, भैरू चौरासी। बता, तो पूजूँ पान-मिठाई।

विधि—प्रति - दिन ७ बार आजीवन 'जप' करे। 'जप' पूर्व-मुख होकर सुबह से करे। काम - धन्धा मिलता है। व्यापार में वृद्धि होती है।

विशेष—एक दूसरे से मिलते हुए उपर्युक्त पाँचों मन्त्र भिन्न-भिन्न ग्रन्थों से उद्धृत हैं। किसी एक मन्त्र को चुने और कम-से-कम १०८ बार नित्य जपे। उत्तम योग में, दीपावली में, ग्रहण - काल में १००८ 'जप' प्रति वर्ष करे। सामने एक रेशमी वस्त्र के टुकड़े पर कुछ चावल रक्खे। चावल के ऊपर एक सुपारी रखकर पूजन करे। धूप, दीप, फूल से पूजन कर १० माला 'जप' करे। बाद में सुपारी व चावल को एक पुड़िया में बाँधे। पुड़िया के ऊपर नाड़ा-छड़ी या पञ्च-वर्णी धागा बाँधकर उसे घर में या दूकान में, गले में, तिजोरी में या कबाट में रख दे। बाद में यथा - शक्ति मन्त्र - स्मरण करता रहे। उन्नति होगी, ऐसी श्रद्धा रक्खे।

यदि आप साधन-सम्पन्न हों, तो शुद्ध चाँदी का सिक्का या गिन्नी (सोने की) रखकर भी उनके ऊपर मन्त्र-अभिमन्त्रण कर सकते हैं। इससे व्यापार न हो, तो मिलेगा और यदि व्यापार हो, तो व्यापार में वृद्धि होगी।

यदि आपको लाभ हो, तो यथा-शक्ति परमार्थ करें। यदि आप ब्राह्मण हों या कर्म-काण्डी हों, तो आप अपने यजमानों को लाभ देने के लिए यह 'प्रयोग' करें और अभिमन्त्रित सुपारी, चाँदी का सिक्का, गिन्नी देकर यजमान की प्रसन्नता प्राप्त करें।

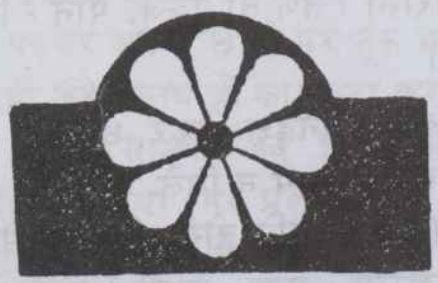

[२]

नजर-दोष, दृष्टि-दोष-निवारण

[नजर-टोना दूर करने के लिए 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २ से ५ में कई 'प्रयोग' दिए गए हैं। यथा—भाग २, पृष्ठ ३७-६४-८१। भाग ३, पृष्ठ १३, ४६, ५७, ६२। भाग ४, पृष्ठ ५७। भाग ५, पृष्ठ १२, ४५, ५०, ५१।

भाग ३, पृष्ठ ६२ में जो मन्त्र दिया गया है, वह हमारी दृष्टि में अधिक प्रामाणिक है। उसको सिद्ध करने की एक अन्य 'प्रयोग'-विधि मुझे मिली है। उस 'प्रयोग'-विधि को यहाँ पुनः दे रहा हूँ—प्रस्तुत-कर्त्ता]

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरू को। ॐ नमो नजर, जहाँ पर-पीर न जानी। बोलै छल सों अमृत - बानी। कहो नजर, कहाँ ते आई ? यहाँ की ठौर, तेहि कौन बताई ? कौन जात तेरो ? कहाँ ठाम ? किसकी बेटी ? कहाँ तेरो नाम ? कहाँ से उड़ी ? कहाँ को जाया ? अब ही बस कर ले, तेरी माया। मेरी जात, सुनो चित्त लाए। जैसी होए, सुनाऊँ आए। तेलन, तमोलन, चहुडी, चमारी, कायथनी, खत-रानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी, जाको दोष ताही के सिर पड़ै। जाहर पीर नजर, सो रक्षा करे। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग-३ में उक्त मन्त्र पढ़कर झाड़ने के लिए लिखा है। मेरी विधि के अनुसार पहले मन्त्र को सिद्ध करे। उसके लिए किसी 'शनिवार' से 'जप' (१ माला) प्रारम्भ करे। शनि-वार के बाद रवि-सोम-मङ्गल-बुध-शुक्र 'जप' न करे। दूसरे शनिवार को पुनः १ माला 'जप' करे। इस प्रकार ७ शनिवार में, ७ माला 'जप' करे। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। तब, नजर-दोष या दृष्टि - दोष - ग्रस्त व्यक्ति के ऊपर मोर - पङ्ख से ७ बार मन्त्र का उच्चारण कर झाड़े। ३ दिन में नजर - दोष या दृष्टि - दोष दूर हो जाएगा।

नजर - दोष नन्हें - मुन्ने से लेकर बड़ों को भी लगता है। सजीव और निर्जीव को भी लगता है। इसीलिए निर्जीव स्थान में नीबू-मिर्च बाँधते हैं और बच्चों के कपाल या गाल पर काले अञ्जन का टीका देते हैं। निर्जीव वस्तु के ऊपर उक्त मन्त्र पढ़कर ७ बार जल का प्रोक्षण देने से विशेष लाभ होता है।

[३]

सर्वांग-पीड़ा-निवारक मन्त्र

(१) उस पार आती बुढ़िया छुतारी, तिसके काँधे पै सरके पेटारी। वह पेटारी कौन सर बाण, सुशर कुषोरा शर-समान। 'अमुक' अङ्ग की व्यथा तन-पीर। लवटि गिरे, उसके कलेजे तीर। आज्ञा पिता ईश्वर महादेव की। दुहाई फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र एक नाथ-पन्थी साधु ने दिया है। पहले इसे विधि-पूर्वक सिद्ध करे। मन्त्र-सिद्धि के बाद 'प्रयोग' करे। सभी प्रकार की शरीर-पीड़ा का शमन होगा। यदि शारीरिक पीड़ा से मानसिक पीड़ा है, तो उसका भी शमन होगा। मानसिक पीड़ा यदि जन्म-जात हुई, तो लाभ न होगा। 'प्रयोग' में 'अमुक' के स्थान पर रोगी के नाम का उच्चारण करना चाहिए। साथ ही, रोगी के रोग का स्मरण कर अपने बाँएँ हाथ की अनामिका अँगुली से जितना नमक उठा सके, उठाए। तीन बार मन्त्र का जप कर नमक को अभिमन्त्रित करे और अभिमन्त्रित नमक रोगी को अपने सामने खिला देवे। ऐसा ७ दिन करने से शरीर-पीड़ा का शमन होता है।

(२) "हुक्म सरकर उन दर-दर रोहनी लगक। सुद·· ·····।"

विधि—पहले उक्त 'मन्त्र' को पर्व - काल में १० माला 'जप' करके सिद्ध करे। 'प्रयोग' के समय मन्त्र के अन्त में (·· ···) चिह्नित स्थान पर रोगी का नाम ले। हल्दी की तीन गाँठें लेकर प्रत्येक से पृथ्वी के ऊपर रोगी का नाम जोड़कर मन्त्र का लेखन करे। ११ दिन तक करे। हल्दी के वजन के बराबर शक्कर बच्चों को दे। इससे ताप, सरदी, थकान और किसी भी अङ्ग की पीड़ा में लाभ होगा। रोगी

को आश्वासन देता रहे। यह प्रयोग दवा से एवं डाक्टर से थके हुए लोगों के लिए लाभ-दायक है। यदि रोगी पास आने में असमर्थ हो, तो साधक उसके स्थान पर भी जा सकता है।

[४]

रोग-निवारण-प्रयोग

ॐ नमो आदेश गुरू को। बाल रखे बाल की, कपाल रखे जोगनी। मुख रखे कुम्भकरण, पीठ रखे विभीषण। नख रखे नरसिंह, कलेजी रखे काली भवानी। कम्बर रखे कम्बर का देव, पिण्ड रखे गोरखनाथ। पड़ा प्राण सात, रखे गुरू की पास। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

विधि—पहले मन्त्र-सिद्धि करे। बाद में जब कोई रोगी आए, तब 'प्रयोग' करे। मन्त्र द्वारा भस्म को ७ बार अभिमन्त्रित करे। कपाल में उससे 'तिलक' लगाए। फिर भस्म को रोगी के रोग - जन्य भाग में लगाए या लगाने को दे। सभी प्रकार के रोग-दोष की शान्ति होगी। लाभ हो जाने के बाद यथा-शक्ति परमार्थ करे। भस्म को ताबीज में भरकर भी दे सकते हैं।

[५]

सर्व-कार्य-साधक जँजीरा

(१) ॐ नमो आदेश गुरू कुं, सात समुद्र बिच किल्ला, सुलेमान पेगम्बर बैठा तख्त, सुलेमान पेगम्बर को चारि मुवक्किल – तारीया, सारीया, जारिया और जमारिया। एक मुवक्किल पूरब गया, लाया देव-दानव को बाँध। दूसरा मुवक्किल पश्चिम को गया, लाया भूत-प्रेत को बाँध। तीसरा मुवक्किल उत्तर को गया, उत्तपितृ को बाँधि लाया। चौथा मुवक्किल दखिन को गया, डाकिनी-शाकिनी को बाँधि लाया। चार मुवक्किल चहुँ दिशि ध्यावं, छल-छिद्र कछु, रहे न पावै। शब्द साँचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

विधि—यदि आपको ऐसा लग रहा हो कि सदैव प्रयत्न करने पर भी आप अपने जीवन के शुभ एवं उत्तम कार्यों को पूर्ण नहीं कर

पाते हैं या आपके चुने हुए कार्य विलम्बित होते जा रहे हैं, तभी यह प्रयोग करें। प्रयोग सरल है। जहाँ आप रहते हों, वहाँ यह प्रयोग करना चाहिए। कपड़े के चार पुतले बनावें। धूप-दीप करके १०० बार मन्त्र जपें। बाद में चार कोनों में चार पुतले आधी रात को जमीन में गाड़ दें। पुतले नन्हें बनावें। उनके माप से जमीन में गड्ढे करे। उनमें पुतलों को रखकर जमीन जैसी थी, वैसी कर दे और भर दे। बाद में कार्य सिद्ध करने के उपाय करे। चिन्तित कार्य पूर्ण हो जायगा। अनुचित कार्य न करे। शुभ कार्य-पूर्ति के लिए ही यह प्रयोग करे। अन्यथा कष्ट होगा।

(२) ॐ नमो आदेश गुरू को। सात समुद्र बीच, अला सुलेमान पेगम्बर बैठा। सुलेमान पेगम्बर को चारि मवक्किल, तारीया, सारीया, जारीया और जमारिया।

एक मवक्किल पश्चिम कुं ध्याया, देव - दानव को बाँधी लाया। दुसरा मवक्किल पूर्व कुं ध्याया, भूत - प्रेत कुं बाँधी लाया। तिसरा मवक्किल उत्तर कुं धाया, अयुत पितृ कुं बाँधी लाया। चोथा मवक्किल दक्षिण कुं धाया, डाकिनी - शाकिनी कुं पकड़ लाया। चार मवक्किल चहुँ दिश ध्याये, छल - छिद्र कहु रहन न पावै। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति, स्फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। वाचा चुके, उभो सुके।

विधि—कृष्ण चतुर्दशी या 'ग्रहण' की रात्रि में श्मशान (मशान) जाए और लोबान की धूनी देकर या लोबान का धूप कर उक्त मन्त्र का १११ बार 'जप' करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होगा। आगे किसी के द्वारा प्रार्थना होने पर उसकी सहायता के लिए 'प्रयोग' करे। 'प्रयोग' करते समय उड़द के ७ दाने सामने रखकर उन्हें उक्त मन्त्र द्वारा १२१ बार फूँके। फिर अभिमन्त्रित दानों को प्रार्थना करनेवाले को दे दे और उसे किसी भी तरह पगड़ी, टोपी या साफा आदि के द्वारा मस्तक के ऊपर रखने के लिए कहे। साधक शुद्धता से रहे। पर - स्त्री से दूर रहे। शुभ कार्यों के लिए 'प्रयोग' करे। दुरुपयोग न करे।

श्री कासिम बापु को उक्त दोनों 'प्रयोग' दिखाए हैं। उनका भी कहना है कि प्रयोग-कर्ता और प्रार्थना करनेवाले दोनों सदाचारी होंगे, तो लाभ शीघ्र होगा।

[६]

मुकदमा जीतने का मन्त्र

अफ़ल - अफ़ल - अफ़ल, दुश्मन के मुँह कुलुफ़। मेरे हाथ कुञ्जी रुपया तोड़कर जर कर।

विधि—शनिवार की रात से 'प्रयोग' आरम्भ करे। ७ दिन में नित्य १०-१० माला 'जप' करे, प्रचलित द्रव्य से 'आहुति' देता रहे। इष्ट-देव का धूप-दीप-फल-फूल-नैवेद्य से पूजन कर प्रयोग आरम्भ करे। ७ दिन लगातार करने पर 'एक अनुष्ठान' होगा। ऐसे कई 'अनुष्ठान' करे। 'लघु अनुष्ठान' में १० माला 'जप' के स्थान पर १ माला 'जप' और 'आहुति' दे। 'आहुति' की भस्म अपने पास रक्खे। कोर्ट-कचहरी जाने के पहिले सब कागज तैयार कर उसके ऊपर उक्त मन्त्र पढ़कर फूंके। अभिमन्त्रित कागज - फाइल को कोर्ट-कचहरी में दाखिल करे। बाद में कोर्ट-कचहरी से जब-जब तारीख मिले, तब भस्म अपने साथ रक्खे। प्रतिवादी के सामने स्वयं या किसी अन्य से भस्म को युक्ति से फेंके या फिंकावे। यदि प्रतिवादी पहले कोर्ट-कचहरी में दाखिल हो, तो भी वैसा ही करे। प्रतिवादी की कार्यवाही रुक जाएगी। बाद में नई अरजी अभिमन्त्रित कर कोर्ट-कचहरी में देवे। कोर्ट-कचहरी का परिणाम आपके पक्ष में रहेगा। विवाद के समय मन्त्र का स्मरण खाली समय में करता रहे। इससे अपने पक्ष को बल प्राप्त होगा। प्रतिवादी से मनमुटाव दूर होकर समाधान भी सम्भव है।

[७]

शत्रु-दमन का अनुभूत प्रयोग

ॐ शत्रु-दमनम् हुं फट् स्वाहा।

विधि—प्रति-दिन १ माला 'जप' किसी भी दिन से किसी मन्दिर में करे। मन्त्र का 'जप' तब तक करता रहे, जब तक शत्रु की कुचेष्टा का दमन न हो जाए। शत्रु के सामने युक्ति से मन्त्र पढ़कर अथवा मन-ही-मन 'मन्त्र'-स्मरण कर फूंक देवे। शत्रु के घर के सामने,

शत्रु के रास्ते में, शत्रु के आने-जाने की दिशा में, शत्रु के व्यापार या नौकरी के स्थान के सामने, शत्रु के वाहन के सामने भी फूँक देवे। शत्रु यदि कोर्ट-कचहरी गया हो, तो वहाँ भी ऐसा ही करे। धीरे-धीरे शत्रु अनुकूल हो जाएगा। तब मन्त्र-'जप' बन्द कर दे। जहाँ स्वयं रहे, वहाँ मन्त्र का 'जप' न करे। मन्दिर या किसी अन्य बाहरी स्थान पर ही 'जप' करे। श्रद्धा से करे, शत्रु का दमन अवश्य होगा।

[८]

आकर्षण के सरल मन्त्र

(१) ॐ मोसमोन सरोवर माहि पानी। जल की जोगणी, पाताल का नाग। जिसको लगाऊँ, उससे लाग। न सूता सुख, न बैठा सुख। फिर-फिर देखे, हमारा मुख। शब्द साचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—पहले धन - त्रयोदशी, काली चौदस (चतुर्दशी) और दिवाली--इन तीन पर्व-दिनों में उक्त मन्त्र का १२५ माला 'जप' विधि-वत् करे। बाद में नित्य 'जप' एवं स्मरण करता रहे। जब आवश्यकता हो, तब 'प्रयोग' करे। 'प्रयोग' में साध्य या साध्या का चित्र अपने सामने रक्खे। चित्र के अभाव में मिट्टी का पुतला बनाकर 'प्राण-प्रतिष्ठा' कर रक्खे। 'प्राण - प्रतिष्ठा' स्वयं न कर सके, तो किसी योग्य ब्राह्मण से कराए। फिर ७ कङ्कड़ ले और प्रत्येक कङ्कड़ के ऊपर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर सामने रक्खे हुए चित्र या पुतले पर फेंके। ऐसा ३ दिन करे। साध्य का आकर्षण होगा और वह पास आएगा, किन्तु उसे जाने दे। उसे बुलाने का प्रयास बार-बार न करे अन्यथा स्वयं को भी कष्ट होगा। 'प्रयोग' के बारे में उससे बात न करे, न ही दूसरों से चर्चा करे।

(२) ॐ झां झां झां। हां हां हां। हैं हैं हैं।

विधि—दिवाली की रात्रि, 'ग्रहण'-काल या उत्तम योग में उक्त मन्त्र का ५० माला 'जप' करे। मन्त्र सिद्ध हो जायगा। 'जप' के साथ-साथ प्रचलित द्रव्यों से 'होम' भी करे। अपने इष्ट-देव के सामने धूप, दीप आदि रखकर 'जप' करे। बाद में जब किसी को बुलाना हो, तब

उसका चित्र अपने सामने रखे। चित्र के अभाव में उसका नाम लिखकर अपने सामने रखे। उसकी प्रबल स्मृति के साथ ५०० बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' करते समय उससे तन्मय होने की भावना करे। इच्छित व्यक्ति आपके पास आ जायगा। 'प्रयोग' केवल शुभ कार्य से ही करे। दुरुपयोग करने से सिद्धि जाएगी और कष्ट भी होगा। जब इच्छित व्यक्ति पास आए, तब उसके साथ उचित वाणी एवं सभ्य व्यवहार करे। कार्य पूर्ण होने के बाद 'प्रयोग'-स्मृति समाप्ति करे, अन्यथा साधक का पतन हो जायगा।

(३) ॐ नमो भगवते रुद्राणि चामुण्डानि ..... मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—रिक्त स्थान में जिसका वशीकरण करना हो, उसका नाम जोड़े किन्तु इसके पूर्व मन्त्र-सिद्ध करने के लिए विना नाम का जो मन्त्र ऊपर दिया है, उसे ही जपे। 'प्रयोग' के समय नाम जोड़कर 'जप' करे। मन्त्र - सिद्धि के लिए धूप-दीप-फल-फूल-नैवेद्य से पूजन करे और इष्ट - देवी के सम्मुख बैठकर 'जप' करे। यम-नियम का पालन करे।

दिवाली, होली या ग्रहण-काल से प्रयोगारम्भ करे। सवा लाख 'जप' करे। यदि न कर सके, तो कम-से-कम १२, ५०० 'जप' करे, अन्यथा कार्य-सिद्धि नहीं होगी। प्रचलित द्रव्यों से 'आहुति' भी देवे।

जिस व्यक्ति को वश करना हो, उसका नाम जोड़कर मन्त्र-'जप' करे और उसके सामने फूंक देवे। यदि वह सामने न हो, तो उसकी दिशा में, उसके घर के सामने, उसके व्यापार-स्थान के सामने फूँक करता रहे। कितना भी बलवान हो, वश में आ जाएगा। तब समय का महत्त्व समझकर जो कार्य हो, उसे पूरा करे। मन्त्र-स्मरण करता रहे। सावधान भी रहे। दुरुपयोग कदापि न करे।

(४) ॐ नं नां निं नीं नुं नूं नें नैं नों नौं नं (.....) आकर्षय स्वाहा।

विधि—यह मातृका-आकर्षण-वशीकरण-शाबर-मन्त्र है। रिक्त स्थान में जिसका आकर्षण या वशीकरण करना हो, उसका नाम जोड़कर मन्त्र - सिद्धि करे। दिवाली की रात को (११) माला 'जप' करे

और १ माला और 'जप' करके प्रचलित द्रव्यों से आहुति देवे। बाद में 'प्रयोग' करे।

'प्रयोग' में उदुम्बर वृक्ष की ७ अंगुल प्रमाण की एक टहनी लाए। टहनी के ऊपर गेरू से साध्य या साध्या का नाम लिखे। साध्य या साध्या के घर जाकर उसके घर की दिवाल में वह टहनी रख दे। यदि सम्भव न हो, तो घर के छप्पर के ऊपर या घर के अगल-बगल की दिवाल में रखे अथवा उसके रास्ते में गड्ढा खोदकर जमीन में रख दे। थोड़े ही दिनों में साध्य या साध्या पास आएँगे। मन-मुटाव दूर कर अपना कार्य पूरा करे। सदुपयोग की भावना से करे अन्यथा कार्य नहीं होगा।

(५) जय हनुमन्ता। तेज चलन्ता। शहर-गाँव, मर-घट में रमन्ता। भैरू साथ उमिया कुं नमन्ता। मेरे बश में 'अमुक' लावन्ता। नमु हनुमन्त बजरङ्ग बल-वीरा, ध्यान धरूँ हिरदे में धीरा।

विधि—सरोवर या तालाब, जहाँ आँक का वृक्ष हो, वहाँ बैठे और शनिवार से शुक्रवार– एक सप्ताह में १०० माला 'जप' करे। प्रति-दिन यथा - शक्ति हनुमत् - पूजन करे और पूजन के अन्त में लौंग सहित पान - बीड़ा हनुमान जी को चढ़ाए। बाद में वह पान - बीड़ा स्वयं खा जाए। इस प्रकार ७ दिन करने से मन्त्र सिद्ध हो जायगा। फिर 'प्रयोग' करे।

'प्रयोग' में जो शनिवार आए, उसकी शाम को चिता की भस्म, तालाब की मिट्टी, चौराहे की धूल लाए। इनके ऊपर ७ दिन तक नित्य १११ बार 'जप' कर अभिमन्त्रित करे। शनि से शुक्र का यह दूसरा क्रम हो जाएगा। इसके बाद तीसरा शनिवार आए, तब सूर्योदय के पहले उक्त ३ चीजें तालाब में विसर्जित कर दे। मन्त्र - स्मरण करता रहे। 'अमुक' के स्थान पर जिस साध्य या साध्या का नाम दूसरे क्रम में लिया जाएगा, वह प्रयोग - कार के पास आ जाएगा। सदुपयोग की भावना से 'प्रयोग' करे। दुरुपयोग की भावना होने पर मन्त्र-देह में स्थित मन्त्र-देव नाराज हो जाएँगे और प्रयोग करनेवाले को दुःख-कष्ट होगा।

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ २३ में 'गण्डा' देने के मन्त्र हैं। वहाँ दिए हुए मन्त्र और विधि दोनों ठीक हैं। कुछ विशेष विधि का

उल्लेख कर रहा हूँ। साधक के पास जब रोगी आए, तब उसके शरीर की लम्बाई के बराबर एक धागा ले। धागे के सात गुना करके बराबर लम्बाई पर गाँठ लगाए। अन्त में एक गाँठ मन्त्र बोलकर लगाए। ७ गाँठ लगाए। फिर उसे रोगी के गले में पहना दे। मुर्तजा अली के नाम से बच्चों को सवा सेर मिठाई बाँटे या बँटवाए।

साधक को पहले पर्व-काल या 'ग्रहण' में मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। उसके बाद गण्डा देवे। मन्त्र का स्मरण बराबर करना चाहिए। रोगियों के कष्ट की शीघ्र शान्ति के लिए यह उत्तम 'प्रयोग' है। यथा-शक्ति परमार्थ करे।

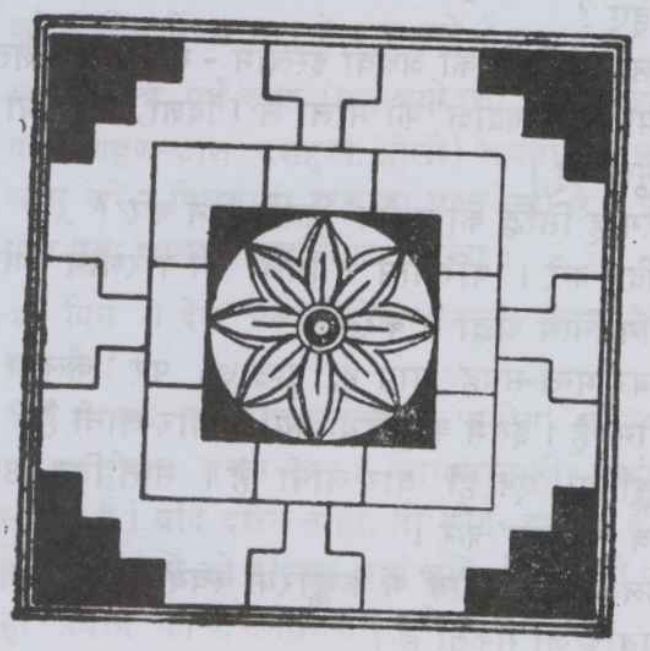

प्रश्नों के उत्तर

समाधान-कर्त्ता :

श्रीयुत चन्दूलाल गण्डालाल शाह

१. प्रश्न-कर्ता : श्री एस. एस. श्याम, होशङ्गाबाद (म. प्र.)

प्रश्न १ - शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग २, पृष्ठ २१, 'सर्वार्थ-साधक मन्त्र'– तीसरी पंक्ति में 'घट्टा पकर' छपा है। वह शुद्ध है या नहीं ?

उत्तर— 'घट्टा पकर' के स्थान पर 'घट्टा पाकर' पाठ शुद्ध है।

प्रश्न २—शाबर - मन्त्र - संग्रह, भाग ४, 'दरगाह सिद्धि' के प्रयोग में 'माला' कौन - सी होनी चाहिए ? दिशा कौन - सी होनी चाहिए ?

उत्तर— 'माला' सीपियों की अथवा इस्लाम - मत में प्रचलित 'माला' ले या फिर 'रुद्राक्ष' की माला ले। दिशा, उत्तर या पश्चिमाभिमुख रहे।

प्रश्न ३ --'दरगाह सिद्धि का प्रयोग' कितने दिन करे ?

उत्तर— ३ दिन करे। परिणाम न मिले, तो परिणाम मिलने तक प्रयोग नित्य श्रद्धा से करे।

प्रश्न ४—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ४, पृष्ठ ७६ पर 'कलवा वीर का प्रयोग' है। इसमें कङ्करियाँ क्या ७ बार लानी हैं ?

उत्तर— कङ्करियाँ एक ही बार लानी हैं। सात दिन उनके ऊपर मन्त्र का 'जप' करे।

प्रश्न ५—'कलवा वीर प्रयोग' में कङ्करियाँ स्वयं लेनी हैं या किसी से मँगवाई जा सकती हैं ?

उत्तर— कङ्करियाँ स्वयं लाए। किसी अन्य से काम न ले, नहीं तो नुकसान होगा। निर्भय बन कर करे या 'प्रयोग' छोड़ दे।

प्रश्न ६ —शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ४ में 'अभीष्ट देवता का आकर्षण हेतु प्रयोग' है। इसमें देवी के आकर्षण में क्या परिवर्तन करना होगा ?

उत्तर-- 'अमुक-देवतायै नमः' के स्थान पर 'अमुकी - देव्यै नमः' परिवर्तन करना चाहिए।

प्रश्न ७ --'विवाहार्थ शाबर-मन्त्र-प्रयोग' निष्फल हो, तो क्या करे ?

उत्तर-- यदि कोई त्रुटि हो, तो त्रुटि को दूर कर दुबारा 'प्रयोग' करे। यदि फिर भी निष्फल रहे, तो 'जन्म-पत्रिका' किसी ज्योतिषी को दिखाए। 'मङ्गल - दोष' या 'काल - सर्प - योग' हो, तो उसका निवारण करके पुनः 'प्रयोग' करे। निष्फलता साधक की होती है, मन्त्र की नहीं।

२. प्रश्न-कर्ता : श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर (राजस्थान)

प्रश्न १- शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ४, पृष्ठ ७५ पर सर्व-कार्य-सिद्धि हेतु 'भैरव-साधना का प्रयोग' है। यह 'प्रयोग' किस दिन से शुरू करे ? दिन में या रात में शुरू करे ?

उत्तर -- शाबर-मन्त्र, पर्व-काल (धन-त्रयोदशी, नरक-चतुर्दशी, दीपावली, ग्रहण-काल, दशहरा, होली) अथवा मङ्गल, रविवार से चालू करे। दिवस या रात का प्रश्न नहीं है। प्रति वर्ष उसी दिन पुनः जागरण कर लेना चाहिए।

प्रश्न २--४० दिन में देव प्रत्यक्ष होकर वचन देता है। क्या यह सच है ?

उत्तर-- यदि साधक उत्तमोत्तम ढङ्ग से 'प्रयोग' करेगा, तो देवता प्रत्यक्ष होकर वचन देगा। भाग्यवान् ही प्रत्यक्षीकरण पा सकता है। यदि दर्शन न हो, तो कोई दुर्भाग्य की बात नहीं क्योंकि मन में जो ईप्सित कार्य होंगे, वे पूर्ण हो जाएँ, तो इसे ही 'प्रयोग' की सफलता समझ लेना चाहिए।

प्रश्न ३ - यदि भैरव जी प्रत्यक्ष हो जाएँ, तो क्या-क्या 'अर्पण' करे ?

उत्तर-- जो अर्पण करने के लिए लिखा है, वही अर्पण करे। यदि प्रत्यक्ष न आएँ, तो 'अर्पण'-सामग्री उसी स्थान में रख दे। श्वेत या रक्त-पुष्प की माला भी रक्खे। (नैवेद्य के रूप में कबाब, मत्स्य, मद्य भी दे।)

प्रश्न ४ --'भोग' कौन से तेल में पकाए ?

उत्तर— जो तेल स्वयं खाते हो, उसी तेल में या शुद्ध घी में पकाए।

प्रश्न ५ – साधना में 'दिशा' कौन-सी होगी ?

उत्तर— उत्तर या पूर्व के सामने।

प्रश्न ६—'आसन' व 'माला' के बारे में क्या करे ?

उत्तर— लाल ऊनी आसन। श्वेत वस्त्र। 'रुद्राक्ष' की 'माला'।

प्रश्न ७—कौन से फूल उपयोग में ले ?

उत्तर— रक्त, श्वेत कनेर या रक्त गुलाब।

प्रश्न ८—'दीपक' तेल या घी – किसका रक्खे ?

उत्तर— शान्ति-पुष्टि-कर्म का 'प्रयोग' है, अतः घी का 'दीप' रक्खे।

प्रश्न ९—'अगियारी' नित्य रखना है या 'भोग' के दिन ?

उत्तर— नित्य रखना है और उसमें गुग्गुल धूप डाले। भोग के दिन अर्पण करना है, अतः उसमें ही सभी सामग्री डाले।

प्रश्न १०—'अगियारी' कब हटाए ?

उत्तर— ४० दिन के बाद या वहीं छोड़ दे। 'अगियारी' होम-कुण्ड का विकल्प है।

प्रश्न ११—साधन - काल में श्रीभैरव जी का चित्र आवश्यक है या नहीं ?

उत्तर— शिवालय में भैरव जी की मूर्ति होती है। वहीं बैठकर 'प्रयोग' करे। अन्य स्थान पर करे, तो चित्र रक्खे।

प्रश्न १२—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ४, पृष्ठ ५२, 'देवता - आकर्षण प्रयोग' में 'क्रीं' होना चाहिए या 'क्लीं' ?

उत्तर— 'क्रीं'। यह प्रथम काली-बीज है।

पीरानी शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : सर्वश्री सैयद मोहम्मद कादरी बापु

'रुहानी आलम' गुलाब नगर, हुशैनी चौक, जामनगर (गुजरात)

पीरानी साधना के लिए निम्न-लिखित नियमों का पालन आवश्यक है—

१. पाक-साफ होना चाहिए। २. साधना - समय में, मासांहार-शराब-नारी-सङ्ग से बचना चाहिए। ३. आत्म-रक्षा मन्त्र का 'जप' करके साधना करनी चाहिए। ४. गरीबों-अनाथों को, बच्चों को दान-पुण्य करे। ५. मन्त्र के लिए 'आशीर्वाद' आवश्यक है। माँ-बाप, घर के सभी लोगों, फकीर-सन्त-गुरु को सहमत करके 'साधना' करे। यदि किसी के साथ कलह हुआ हो, तो भी उसका कृपा - पात्र बनकर ही 'साधना' करे। ६. पहले 'बिस्मिल्लाह' करे। 'मूल-मन्त्र' के आगे-पीछे 'दरुद शरीफ' का पाठ यथा-शक्ति करे। ७. पीरानी साधना में कोई भी व्यक्ति किसी भी मन्त्र का 'जप' कर सकता है। जाति-भेद नहीं है, लेकिन जो करना है, उसका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। यदि स्वयं सन्तुष्ट न हो, तो 'प्रयोग' न करे।

१. उपयोगी 'प्रयोग'

यह 'प्रयोग' मुझे पड़ोसी देश के सिन्ध प्रान्त से प्राप्त हुआ। सिन्ध प्रान्त में 'नवाबशा' नामक शहर है। वहाँ एक आजीवन ब्रह्मचारिणी साधिका हैं। उनका नाम 'शकीना बीबी' है। इन्होंने बहुत उच्च कोटि की साधनाएँ करके अपना नाम प्रसिद्ध किया है। मैं सैय्यद हूँ, तो उनसे मिलने की मुझे अनुमति मिली। बातचीत में उनसे 'शाबर-मन्त्र' की चर्चा हुई। उन्होंने कृपा कर शाबर में 'पीर-साधना' का विवरण दिया, जो यहाँ प्रस्तुत है।

'पीर-साधना' के प्रस्तुत 'प्रयोग' हेतु एक अलग कमरा होना आवश्यक है। कमरे को स्वच्छ और सुन्दर बनाना चाहिए। फिर कमरे में लकड़ी का एक तख्त रक्खे। तख्ता कमरे के माप के अनुसार ही हो,

न बहुत ऊँचा, न बहुत नीचा नहीं होना चाहिए। तख्त के ऊपर चावल की चार 'कबर' बनाएँ। प्रत्येक 'कबर' के ऊपर नीले कपड़े का 'गिलाफ' या 'सेज' चढ़ाएँ। गिलाफ, 'कबर' की माप के अनुसार होना चाहिए और उसे अच्छी तरह सजाना चाहिए, जिससे वह मन-मोहक लगे। गिलाफ के चारों कोनों के ऊपर शुद्ध गुलाब के इतर की एक-एक शीशी ढक्कन खोलकर रक्खे। प्रत्येक 'कबर' के पास एक नारियल भी रक्खे। 'कबर' के ऊपर गुलाब के फूल, घी का दीपक और लोबान का धूप रक्खे। यह सब तैयारी इस प्रकार पूरी करे कि तैय्यारी पूरी होने के बाद 'नवचंदी गुरुवार' पड़े। प्रति-मास चन्द्र-दर्शन होता है। चन्द्र-दर्शन के बाद जो पहला गुरुवार आए, वह 'नवचंदी गुरुवार' कहलाता है। 'नवचंदी गुरुवार' की रात को ११ बजे से 'प्रयोग' — आरम्भ करे और सुबह होने से पहले समाप्त करे। पहले, स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहने। पश्चिम की ओर मुँह करके बैठे। आसन ऊन का या कम्बल का ले। 'हकीक' की माला ले।

'जप' प्रारम्भ करने से पहले—'बिस्मिल्लाह हिर्र रहेमानिर्र रहीम' बोले। फिर दरुद शरीफ का २१ पाठ कर मूल-मन्त्र का बारह हजार 'जप' करे। 'मूल - मन्त्र' के १२,००० 'जप' के बाद २१ बार 'दरुद शरीफ' का पुनः पाठ करे।

'दरुद शरीफ' का पाठ इस प्रकार है–

"अल्लाहमा सल्ले अला सैयदना व मौलाना मोहम्मदीव वबारीक वस्सल्लीम।"

'मूल-मन्त्र' इस प्रकार है—

"कालु शाह, लाल शाह, मान शाह, सुब्हान शाह।"

इस प्रकार ४० दिनों तक प्रतिदिन प्रातः होने तक १२ हजार 'जप' कर ले। ४० दिन में 'मन्त्र'-सिद्ध हो जाएगा। यदि ४० दिन के भीतर साधक की मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाएँ, तो भी 'प्रयोग' निश्चित क्रम से पूर्ण करे। ४१ वें दिन 'शाबर' का विसर्जन कर दे। इसके बाद, जब आवश्यकता हो, तब केवल 'मूल-मन्त्र' का १२,००० 'जप' कर 'प्रयोग' करे। सभी कार्य अच्छे ढङ्ग से पूर्ण हो जाएँगे। मन में जो भी शुभ मनोकामनाएँ होंगी, वह पूर्ण होंगी।

जब मन-चाहा कार्य हो जाए, तब यथा-शक्ति परमार्थ करे या करावे। ईमान से रहकर सदैव पीर साहिबों का स्मरण करे। 'मन्त्र'-स्मरण भी करता रहे। घर से बाहर निकले, कोर्ट-कचहरी में जाए, परीक्षा देने जाए, सभा-सोसायटी में जाए, बड़े लोगों से मिलने जाए, कलह-मन-मुटाव दूर करने के लिए जाए अथवा कोई भी शुभ कार्य हेतु जाए, तब 'मूल-मन्त्र' का स्मरण करता रहे। इससे कार्य में तो सफलता मिलेगी ही, साथ-ही 'आत्म-कल्याण' भी होगा। 'रक्षा' भी होगी। 'मान-प्रतिष्ठा' भी बढ़ेगी। जटिल कार्य सरल बन जाएगा। बाधाएँ दूर होंगी। लोग प्रशंसा करेंगे।

कुटुम्ब-सेवा, दुःखी व्यक्तियों की सेवा करे। लोभ में न पड़े। अनुचित कार्य के लिए अथवा बुरी कामनाओं को पूरा करने के लिए 'प्रयोग' न करे। 'प्रयोग' करने के साथ-साथ अपनी योग्यता बढ़ाने का ध्यान रक्खे। आस-पास के योग्य, वयोवृद्ध महानुभावों से मार्ग-दर्शन ले। 'आत्म-कल्याण' एवं 'पर-कल्याण' के लिए ही 'प्रयोग' करे।

२. मोहिनी मन्त्र

तन मोहुँ, मन मोहुँ। मोहुँ सकल शरीर। झीन्दा शाह मदार की मोहिनी मोहुँ। मदद पीर दस्तगीर।

विधि—किसी भी मास के शुक्ल पक्ष में, कमर तक पानी में खड़े रहकर १४ दिनों में उक्त मन्त्र का सवा लाख 'जप' करे। इससे 'मन्त्र-सिद्धि' हो जाएगी। फिर 'प्रयोग' करे। पानी में अधो-वस्त्र पहनकर खड़ा हो।

जब 'प्रयोग' करना हो, तब एक चुटकी मिट्टी ले और उसके ऊपर उक्त मन्त्र ७ बार पढ़कर फूँके। फिर साध्य या साध्या के ऊपर इस मिट्टी को युक्ति से डाल दे। यदि फेंकने में असफल रहे, तो युक्ति से साध्य या साध्या के हाथ में दे देवे। मुँह पश्चिम की ओर रहे। 'माला' कोई भी ले सकते हैं।

३. कन्या-विवाह हेतु अनुभूत प्रयोग

(१) मिट्टी का एक नया घड़ा-कलश लेवे। घड़े में **'अल बलीयाँ'** दो अक्षर का मन्त्र लिखे। मन्त्र के नीचे **'शादी के लिए'** ऐसा

लिखे। फिर इसके नीचे **'कन्या का नाम'** और उसके आगे उसी पंक्ति में **'कन्या की माँ का नाम'** लिखे। मन्त्र व नाम लिखने के बाद घड़े (कलश) में पानी भरे। पानी भरकर उसे दीवार पर जोर से मारे, जिससे घड़ा (कलश) टूट जाए। टूटे हुए घड़े के टुकड़ों को एकत्रित कर धरती में गड्ढा खोदकर दबा दे। शुक्ल पक्ष में, ७ दिन तक लगातार ऐसा करे। खुदा की कृपा से कुछ दिनों में ही विवाह निश्चित हो जाएगा। श्रद्धा से करे। अनुभूत प्रयोग है।

(२) जिस कन्या का विवाह न हो रहा हो या जिस कन्या को अच्छे पति की मनोकामना हो, उसे निम्न-लिखित मन्त्र का असंख्य या अगणित संख्या में 'जप' करना चाहिए। दूसरे शब्दों में 'जप' सदा-सर्वदा करे। मन्त्र इस प्रकार है—**या अलीयाँ !**

४. अभिचार-निवारक प्रयोग

आदते कबीर या अभिचार को दूर करने के लिए इश्मे इलाही **'अल तव्चाबो'** मन्त्र का जप करे। मन्त्र-जप के पहले और अन्त में तीन बार 'दरुद शरीक' पढ़े। 'माला' द्वारा मन्त्र का 'जप' करते समय अपने पास एक शुद्ध बर्त्तन में थोड़ा 'जल' रक्खे। जप के समय 'जल' के ऊपर अपना एक हाथ रक्खे रहे। 'जप' के बाद जिस व्यक्ति पर अभिचार-प्रयोग किया गया हो, उसे जल पिला देवे। यदि जल सीधे पिलाना सम्भव न हो, तो खाने-पीने की वस्तुओं में, शरबत में, चाय-काफी में मिलाकर पिलाए। २१ दिन तक 'प्रयोग' करे। सभी प्रकार के अभिचार-प्रयोग का निवारण होगा। साथ ही, अभिचार-प्रयोग करनेवाला पश्चात्ताप भी करेगा।

५. चोरी की खबर पाने के लिए प्रयोग

हयहात हयहात लेमातु अद्दुन

विधि—उक्त मन्त्र का पहले सवा लाख 'जप' करे। 'जप' किसी भी दिन से प्रारम्भ किया जा सकता है और सुविधानुसार पूरा किया जा सकता है। सवा लाख 'जप' के बाद 'प्रयोग' करे। जब कोई वस्तु खो जाए या चोरी हो जाए, तब उक्त मन्त्र का १४ बार 'जप'

करे। मन्त्र-'जप' के पहले और बाद में 'दरुद शरीफ' का पाठ कर ताली बजाए। ऐसा करने से चोरी हुई या खोई हुई वस्तु मिल जाएगी अथवा उसका पता मिल जाएगा या उसके बारे में कुछ जानकारी मिलेगी। 'प्रयोग' परमार्थ की दृष्टि से करे या कराए।

६. चोरी की खबर पाने के लिए प्रयोग

एक अहमद, दो अहमद, तीसरा जब कहु, जब खबर मिल जाए।

विधि—[१] उक्त मन्त्र का पहले सवा लाख 'जप' करे। 'जप' किसी भी दिन से प्रारम्भ करे और कभी भी पूरा करे। बाद में १४ बार मन्त्र का 'जप' कर 'प्रयोग' करे। यह बड़े अनुष्ठान की विधि है।

[२] लघु अनुष्ठान में, ४१ दिन ४१ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करना होता है। इसके बाद जब कोई वस्तु चुरा ली जाए या खो जाए, तब १४ बार मन्त्र का 'जप' करे। मन्त्र-'जप' के पहले और बाद में 'दरुद शरीफ' का पाठ करे और ताली बजाए। जब वस्तु का पता लग जाए, तब ३ बार कहे—**'अहेमद सल्लला हो अलहे वस्सलम।'** यथा-शक्ति परमार्थ करे व करावे।

७. बवासीर दूर करने का मन्त्र

हबली-हबली, जब जबुरा। खुरासान की बेटी शाह, खुनी-बादी दोनों जा।

विधि—'कमरदर अकरब' अर्थात् 'चन्द्र-ग्रहण' में, उक्त मन्त्र का १११ बार 'जप' करे। बाद में, जब किसी को खूनी या बादी बवासीर हो, तब पीतल के एक लोटे को माँजकर साफ करे और उसमें जल भरे। जल के ऊपर हाथ रखकर उक्त मन्त्र को १११ बार जपे और रोगी को आबदस्त अर्थात् शौच हेतु दे। साथ ही, मिट्टी के २१ ढेले भी दे। प्रत्येक ढेले पर ११ बार उक्त मन्त्र पढ़कर रोगी को दें। रोगी ७ ढेले और लोटा भर जल लेकर शौच को जाए। शौच

से निवृत्त होने के बाद लोटे में जल भरकर रख दे। दूसरे दिन पुनः ७ ढेले और लोटा भर जल लेकर जाए। इस प्रकार तीन दिन करे। बवासीर दूर हो जाएगी।

८. ज्वर-नाशक प्रयोग

सुरजना सरप बना, नजर बना, तक बना, पाताल बना, सरदी पेड कीलां, दवाली - वताय कीलां, हज़रत खीजर ख्वाजा जुनेद पीर की चोकी।

विधि--उक्त मन्त्र को पहले शुभ काल में 'जप' कर सिद्ध कर ले। फिर आवश्यकता पड़ने पर रोगी के मस्तक पर हाथ रखकर उक्त मन्त्र का ७ बार 'जप' करे। ज्वर उतर जाएगा। रोगी स्वस्थ हो जाएगा। विचित्र टोटका है।

९. पेट के दर्द के लिए मन्त्र

हुदा खुदादा हुदा खुदा दे। रसुल दो हुदा चार पारदा। आयत कुरआन मजीद दी हुदा पीरा ने पीर दस्तगीर मीरा मोहीय्युदीन दा बख्स फकीर दा।

विधि—उक्त मन्त्र को नीम की टहनी पर २१ बार पढ़कर रोगी को चाटने के लिए दे दे। पेट-दर्द दूर हो जाएगा।

१०. दरगाह-सिद्धि का प्रयोग

आयतल कुर्शीका दील कुरआन। नबी रसुल बैठे सात आसमान। सात आसमान के एक दगाली। मुहम्मद रसुल्लल्लाह की रखवाली। लोहे का कोट, तांबे की किवाड़। कुल की कुजी दे दे दिखला दे। हकला इलाहा इल्ललाह मोंहमदुर्र-सुलल्लाह सल्ल्लाहो अलय है वस्सलम।

विधि--'प्रयोग' प्रारम्भ करने से पहले किसी मजार के पास जाए। उस पर फूल की चादर बिछाए, इत्र चढ़ाए, अच्छी सुगन्ध-

वाली अगरबत्ती चढ़ाए और करे। फिर, साहेबे कबर को न्योता देवे। दूसरे दिन एक बालक को साथ में लेकर जाए। बालक को मजार के सामने बैठा दे। फिर 'हिसार'—'आत्म - रक्षा' के मन्त्र पढ़े। 'हिसार' के बाद १०० बार 'दरुद शरीफ' पढ़कर उक्त मन्त्र का १२०० 'जप' करे। पुनः १०० बार 'दरुद शरीफ' पढ़े। बालक को जो जानना होगा, वह साफ-साफ दिखाई देगा। अथवा बालक से आप जो प्रश्न पूछेंगे, उसका वह उत्तर देगा।

विशेष--यदि बालक किसी दूसरे व्यक्ति का हो, तो उसे उस व्यक्ति से बिना पूछे न लाए। यदि बालक भयभीत होगा, तो 'प्रयोग' सफल न होगा। 'प्रयोग' एक ही बार करे। बार-बार 'प्रयोग' करने से प्रश्नकर्त्ता को सच्चे उत्तर मिल नहीं पाएँगे। दुरुपयोग की भावना से 'प्रयोग' कदापि न करे। कार्य हो जाने पर बालक को अच्छी तरह से खिला-पिलाकर सन्तुष्ट करे। यह 'हाजरत प्रयोग' है। 'मूल-मन्त्र' के पहले और बाद में, १०० बार 'दरुद शरीफ' का पाठ करते समय बालक को 'मजार' के पास बैठा रहना आवश्यक है। 'हिसार' (आत्म-रक्षा) के मन्त्र, 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के अन्य भागों में दिए गए हैं।

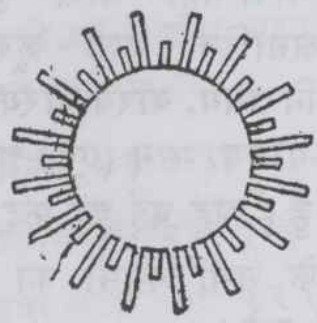

शाबर-मन्त्र-संग्रह

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीयुत रामकृष्ण व्यास

कोट, डीडवाडा, नागौर (राजस्थान)

१. वशीकरण प्रयोग

'शाबर - मन्त्र - संगह', भाग २ में स्त्री-वशीकरण मन्त्र दिया है। मन्त्र का नाम भग-मालिनि मन्त्र है। यह मेरे पास इस प्रकार है–

मन्त्र—ॐ ऐं भग-भुगे भगनि भगोदरि भग-माले भगावहे भग-गुह्ये भग-योने भग-निपातिनि सर्व-भग-वशंकरि भग-रूपे नित्य-क्लिन्ने भग-स्वरूपे सर्व-भगानि मह्यानय वरदे रेते सुरेते भग-क्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भग-विच्चे क्षोभय-क्षोभय सर्व-सत्वान् भगेश्वरि ! ऐं ब्लूँ जँ ब्लूँ में ब्लूँ मौं ब्लूँ हें ब्लूँ हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वश-मानय स्त्रीं हरल्बें ह्रीं भग-मालिनि स्वाहा ॥

विधि—नित्य १०८ 'जप' करे।

२. भूत-बाधा दूर करने के लिए सिद्ध प्रयोग

मन्त्र—ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें हस्त्रौं हस्फ्रें हसौं ॐ नमो हनुमते महा-बल पराक्रम मम परस्य च भूत - प्रेत - पिशाच-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-पूतना - मारी-महा - मारी - कृत्या-यक्ष-राक्षस-भैरव-बेताल-ब्रह्म-ग्रह - ब्रह्म-राक्षसादिक - जात - क्रूर-बाधान् क्षणेन हन-हन जृम्भय-जृम्भय, निरासय-निरासय, वारय-वारय, बंधय-बंधय, नुद-नुद, सूद-सूद, धनु-धनु, मोचय-मोचय, माम् (एनं) च रक्ष-रक्ष महा-माहेश्वर रुद्रावतार हां हां हां हुँ हुँ हुँ हुँ घहुं घहुं घहुं फट् स्वाहा।

विधि—अनुष्ठान के सभी नियमों का पालन करते हुए उक्त मन्त्र का सवा लाख 'जप' करे।

३. पीलिया झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—कौखा का पूत कौखा, धौखा मार कर वहाँ दूँ। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि--होली, दिवाली, गहण में ३ या ५ माला 'जप' से सिद्ध होगा । फिर पीलिया के रोगी को सामने बैठाकर चाकू खोलकर झाड़े ।

४. बाय-गोले का दर्द झाड़ना

मन्त्र--बीला काटूँ, सीला काटूँ । बीले का बाप - दादा काटूँ । बीले की उँगली, कलेजा काटूँ । बीले की सारी जड़ काटूँ ।

विधि--'प्रयोग' प्रारम्भ करे, तब 'बीला काटूँ' स्वयं बोले । रोगी उत्तर दे कि 'काटो' । ऐसा कई बार करे । फिर चाकू सीधा खोल कर जमीन पर मन्त्र बोलते हुए लकीर खींचे और उलटे चाकू से बीमार के पेट पर लकीर करे, जब तक दर्द बन्द न होवे । ऐसा करने से दर्द बिलकुल बन्द हो जाएगा । शायद ही दूसरी बार 'प्रयोग' करना पड़े, फिर दर्द न होगा । मन्त्र को जन्माष्टमी, होली, दिवाली, ग्रहण-काल में 'जप' कर सिद्ध कर लें ।

५. हाजरात का मन्त्र

मन्त्र--बिस्मिल्लाह, राम रहीम बिस्मिल्लाह जाहिर ।

विधि--उक्त मन्त्र का सवा लाख 'जप' करे । लोबान धूप करे । बाद में, 'प्रयोग' करे । 'प्रयोग' हेतु मन्त्र को जपते हुए सुगन्धित तेल से काजल बनाए । तेल - सहित काजल हथेली पर लगाकर मन्त्र फूंके और १२ वर्ष के बच्चे को दिखाए, प्रश्न का उत्तर मिलेगा । स्त्री को भी दिखेगा, पुरुष को नहीं दिखेगा ।

६. स्वप्न में प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का मन्त्र

मन्त्र--ॐ निराकार निर्विकार तू ही विश्व की खबर सुनावे ।

विधि--पहले सवा लाख 'जप' कर सिद्ध करे । फिर, रात्रि को सोते समय १००० 'जप' कर, माला सिरहाने रख कर, सो जाए । स्वप्न में, प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर मिलेगा ।

७. सुशुद्ध नृसिंह-प्रयोग

मन्त्र--ॐ जयति-जयति नृसिंह, उग्र-नृसिंह, बल-वीर्य, भीषम जटा, कोट पाट गगनं मेघ - माला, वाबल-भुजा बल-दण्ड, बल-लङ्क

बल-चरण शोभा तुम्हारी। फाट खम्ब ऊबजी दया भाजरे दुष्ट नृसिंह आया। जले नृसिंह, स्थले नृसिंह। जहाँ नृसिंह, तहाँ नृसिंह। पन्थ में, चोर में, छोर में, राज में, राज के तेज में। नृसिंह नाम निरमला घट में राखो पूर, प्रतिज्ञा प्रहलाद की संकट परे हजूर। चली-चली आवती मूँठ कर नौखंडी। जब आये बनखण्डी स्वामी। जब नूनी नागर, जब गङ्गा न्हाये, जब धरे अचल पर पाँव, शीत भूत चोर सिंह मोय राख। मेरे परवार ने राख। मेरे जन्म-स्थान ने राख। आगै राखै, शिव को वीर पाछे राखै। भौंर वीर, अगल-बगल नृसिंह। उलटत नृसिंह, पलटंत काया। जा कारण नृसिंह, वीर जू आया। चोर न छुए, बाघ ना खाय। कीडौ काँटा, लागै न पाँव। आवती बलाय भस्म हो जाय। सो स्वामी, अब चल राजा। शब्द साँचा, पिंड काचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि—किसी शुभ दिन से चन्दन का चूरा और लोबान मिला कर धूनी देकर २१ बार उक्त मन्त्र 'जपे'। 'भोग' हेतु १ नुगदी (बूँदी) का लड्डू नित्य रखे। ४० दिन तक 'जप' करे। बिच्छू आदि का काटा ठीक होगा। सामने आने से हर प्रकार का उत्तर ठीक-ठीक मिलेगा। होली, दिवाली, ग्रहण-काल में भी 'जप' करे।

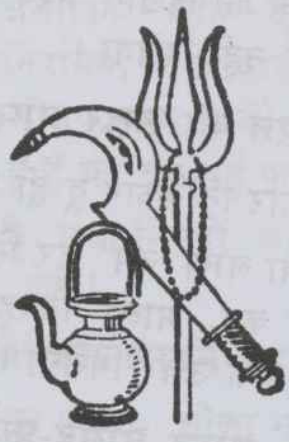

शाबर-संरक्षण मन्त्र

(वैद्यराज लक्ष्मीकान्त घुटके के संग्रह से संग्रहीत)

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सन्तोषकुमार घुटके

महात्मा-नगर, नासिक (महा-राष्ट्र)

१. शाबर-सिद्धि-मन्त्र

ओम नमः मन्त्र सिद्धि का। समुद्र, समुद्र दीप में टापू। टापू में फटिक-शिला। फटिक-शिला ऊपर कुकवा का वृक्ष। उसके नीचे वज्र-योगिनी की गुफा। वज्र-योगिनी की गुफा में बाघनी व्याई। बाघनी के पुत्र दो हुए। एक का नाम नृसिंह, एक का नाम हरसिंह। हरसिंह विद्या उपाई, नृसिंह लिया बुलाई। एक खील खुटेवा पठाया, एक खील चौदिसा का गुलाया। कौन-कौन गुलाया, नवीन गुलाया। खूरासान बुलाया। दोन सिंह शार्दूल, तीन श्वेत सुनहरी, चार जटाल, पाँच लटाल, सहा पटाल, सात उटीया, आठ लौहिय, नवु-पोहिया, दस रोजिया, ग्याराह गहौया, बारा मेडिया, तेरा अधलेडिया, चौदा चीतिया, पन्धरा बारह जात।

अठारह कुली के सिंह। एक कोस का बुलाया, दो कोस का आया। दो कोस का बुलाया, चार कोस का आया। चार कोस का बुलाया, आठ कोस का आया। आठ कोस का बुलाया, छेदनी बारह कोस का आया। बारह कोस पूर्व, बारह पश्चिम। बारह दखिन, बारह उत्तर। नदी-नाले का आया। खेजु-खोचर का आया। गिरि-पर्वत का आया। डरे-डावरे का आया। सडे-मसान का आया। वाट - घाट का आया। गडी-गुफा का आया। रूख-वृक्ष का आया। बाँस के बीडे का, धाँस के कूचे का आया। गोबर की चौथी का आया। जहाँ - जहाँ से आया, हाथ - पाँव उपाडता आया। मुख बावला आया। सव्वा हाथ धरती भिजोवता आया।

जा-जा मार पटक पछाड़। मार के कलेजा चाखना। चोखे ता कुमारी कन्या के पातक में पाव डालेगा। लोना चमारी के कुण्ड में

पड़े। धोबी की नाँद में पड़े। ढेढ के खप्पर में खाय। गोरख का दण्ड तोड़े। ब्रह्मा का जनेऊ तोड़े। महा - रुद्र का त्रिशूल तोड़े। विष्णु का खड्ग मोड़े। अगला पाँव, पिछला पाँव से कुलु। पुलट-उलट की डाढ। तले की डाढ से कीलू।

जो मोसे करेगा रार, मेरे चेले से करेगा रार, जो मेरे गुरु से करे रार, मेरे जाति से करे रार, तो कारी कन्या के पातक में पाँव डाले। गोरख दण्डा तोड़ेगा। ब्रह्मा का जनेऊ तोड़ेगा। विष्णु का खड्ग तोड़ेगा। शिव का त्रिशूल तोड़ेगा। वाचा चूके, तो खड़ा हुआ सूखे। वाचा चूके, तो बाघनी का दूध हराम। बाघनी की सज्या पे पग धरे। सिताबी न आवै, तो माता का दूध हराम। सिताबी न आवै, सो नऊ-नाथ चौरासी सिद्ध की वाचा चूक झूँठी पड़े। गुरू की शक्ती, मेरी भक्ती। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥ छू।

विधि—उक्त मन्त्र २१ दिन २१,००० जपे। सउ की मूर्ति बनाए। पूर्व को मूर्ति का मुख कर दीपक आगे रक्खे। धूप आदि से पूजा कर 'जप' करे। 'जप' कर माथे पर तिलक करे। सभी प्रकार के भूत-प्रेतों पर यह 'प्रयोग' चलता है। मन्त्र सिद्ध होने पर अनेक प्रकार की सिद्धि मिलती है।

२. शाबर-रक्षा-मन्त्र

विधि—निम्न-लिखित शाबर-मन्त्र रक्षा हेतु उपयोगी हैं। सभी मन्त्र 'ग्रहण' - काल में जपने से सिद्ध हो जाते हैं। फिर आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।

(१) जाग-रे-जाग हनुमान बली। घट - पिण्ड की करी रखवाली, दोनों हात से बजावे ताली। दन्दि-दुशमन की तोड़ नली। ये दुखकानी वारा करे, हनुमान बली। आला-आला हनुमन्ता। खांक्ष्यावर भाले दूरुन उड़ाले। जाऊन कावलासात पडल ल्याची मोउ कंबर। आरे-आरे वीर हनुमन्ता, तुझचा कपाली म्हसीचा टिला। तुमको नमती बुधकुमारा, या दुःख-दरद का भुतपली रक्ता। जादू, जंत्राच्या भारी मस्तकी खिला। आटा की सटाकी खीव-खीव। चवर उता गङ्गागीर-जाचे हाउ तुटो। महा-देव का चक्र पडो। सुखदेव की पोथी पडो। भिम की गदा पडे। नारसिंग जेपाल, अब देखो तेरे मन्त्र की सङ्गत। मेरी भक्ती, गुरु की शक्ती। फूरे मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

(२) पाव कू राखे पायेला। पिठ कू राखे काल-भैरव। क्षेत्रपाल शिर को राखे। हनुमन्त रखवाल सिलकरे, राज करे, प्रधान करे, अकल करे, सही करे। टोना करे, बुध-घात करे, केस - घात करे, जो करे वही मरे। फूरो मन्त्र, गुरू महा - देव का। गुरू की शक्ती, मेरी भक्ती। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥ छू

(३) हनुमन्ता - गुणवन्ता, कुडली कपाट से कमान। बैठे आगलट पालगट बाँध। कनेरी का घाट। जल बाँध, थल बाँध। फिरती कैकण्ड बाँध, आग्या बीर बाँध। बावन कुय्या बाँध, बावन मेसका बाँध। कौन बाँधी, हनुमान वीर बाँधी। ना बाँधी, तो गुरू वस्ताद हनुमन्ता की आन। गुरू की शक्ती, मेरी भक्ती। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

(४) बहेर सोने की छडा, कान फाडे की धूनी जलाना। मुङ्गी पे बैठा, सैय्यद मोहम्मदा वीर। जिसकी करणी, उस पर चलेगी। कापर सयेलना दूर कर, ना करे तो गुरू वस्ताद गीरी की आन। मेरी भक्ती, गुरू की शक्ती। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥ छू

(५) वहाँ से मोहम्मदा विर कहाँ से आया ? गडी-गड से आया। कौन का पूत, जो कौन का पूत बाँध। चौरासी लाख भूत बाँध। सात से बाँध। हसन-हूसेन कपाली जायचे हज चले। मोहम्मदा वीर चले। हनुमान विर चले। अठरा कोटी विद्या चले। नवसे चले। अर्जून के वाण चले। भाव की गदा चले।

(६) काली - काली, महा - काली। ज्यावे सीपी, वलके डाहोली। दोनों हात से बजावे टाली। बाँएँ याट ज्या बसे, काल-भैरव। उसका काट-काट। कौन रखा कनकाला तोहू, म्हसासूर येऊ का उज्याला कर आला। मछिन्द्र का सोटा, काल-भैरव का पाव तुटा। दूरालाजी लूखा। किया हाला सती सके का बाँधु। काल राखे गोरखनाथ सिंह-नाथ। फूरे अडबङ्गी। बोले, फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

(७) क्षेत्रपाल शिर कू राखे। हनुमन्त रखवाल सील करे, राज-करे, प्रधन करे, आकल करे, सही करे। टोना करे, दोना करे, द्रिष्ट-घात करे, केश-घात करे, जो करे, तोच भरे। फूरो मन्त्र, गुरू महा-देव का मन्त्र साँचा॥

(८) बिसमिल्लाह रहिमाने रहिम। आव रे आव। कहाँ से आवे ? पाताल से आवे। कहाँ लग आली ? ब्रह्मा का हूकुम तोड। कर ज्योती उसके दिल का सहेरा। महा वीर तुमने लाभ। हूकूम गुरू महाराज का। उसकू मह चलाऊँगा। उसका हूकुम उठा देना। अपना हूकुम बैठा देना। गरीब का शब्द छुडा देना। कच्चा-कच्चा गुरू का। मूठया लहू, सूलास देश में भेजूँ। ना भेजूँ, तो काल-भैरव को कहाँ भेजूँगा। उसके दिल का सन्देशा तुमने लेना, ना लावे तो विर-हनुमान वहाँ भेजूँगा। मोहम्मद वीर वहाँ से चलाऊँगा। आग्या वेताल वहाँ से उडा लूँगा। उसके सर पर पड, उसके पिठ पर पड, उसके कलीजे पे पड, ना पडे तो तेरे कू सौगन्द डालूँगा। कौन-सी सौगन्द, राम-लक्ष्मण-सिता-जानकी-हनुमान जता। गुरू की सङ्गत, मेरी भगत। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।।छू

(९) बिसमिल्लाह रहिमाने रहिम। किने छोडी, किने घाडी। किधर जाती, किधर आती। वहाँ से बैठूँगा, वहाँ से उठूँगा। उलट लावु, पलट भेजूँगा। तेरे नाम का टाक मैं तोडूँगा। गुरू महाराज के चरणों का ईलम चलाऊँगा। ना चलाऊँगा, तो तेरे कू वहाँ हनुमान का हूकुम डालूँगा। बिना हूकुम चले, तो सिता माता की सेज पर पाँव धरेगा। ना धरे तो, हनुमान की लटी तूट पडे। गुरू की सङ्गत, मेरी भगत। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

(१०) बिसमिल्लाह रहिमाने रहिम। चार चौकी भारले, होली किली करु, बीर नरसिंग के आगे धरु। मेरी क्रिया, मेरी हात, मेरा गुरू जोगी - नाथ। मेरे घर पर वीर नारसिंह की चौकी। मोहम्मदा वीर की चौकी। आग्या वेताल की चौकी। काल - भैरव की चौकी। काल - भैरव काशी के कौतवाल, मेरे पिण्ड - प्राण कू वीर नरसिंग तू रखवाल। ना रखवाल, तो तेरे कू महा-देव-पार्वती की आन। राम-लक्ष्मण, सिता-जानकी की आन। हनुमान - जती की आन। गुरू की सङ्गत, मेरी भगत। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा, कावउ देश का इलम साचा॥ छू

(११) बीर हनुमान, बड़ा प्रतापी। वहाँ भेजूँ बाजे चौघडा, चार घडा। कहाँ-कहाँ का चार घड़ा, चार विरोकर पहिला वीर कौन-सा ? पहिला काल - भैरव, दुसरा विर महा-वीर। तिसरा मोहम्मदा वीर, चौथा वीर आग्या वेताल। ज्या रे, कहा ज्या, जील घठानी ज्या।

पीलु आना। दूसरा हूकुम किने बटाया, किने उठाया। तिसरा हूकुम किने बुलाया, किने चलाया। चौथा हूकुम वीर हनुमान का वहा लग जाना, मेरा दिल का हूकुम बज्याकर। आ रे हनुमन्ता, अ रे गुणवन्ता, कुण्डी कोठ कमान वर हनुमान वसला। ताप बाँध, तीजारी बाँध। आलकट बाँध, पलकट वाँध। कनेस का घाट बाँध, आवटा बाँध। चव्हाटा बाँध, हल बाँध। घल बाँध, जनकी - चुडेल बाँध। साती आसरा बाँध, म्हसासूर बाँध। मुण्डयावत खईस बाँध, दिठ बाँध, मुठ बाँध। ना बाँधे, तो विर वेतालाची आन। गुरू की शक्ती, मेरी भक्ती। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥छू

(१२) निंबू काटकर भूई में गाड़ू, निंबू लागे हनुमान के हात। हनुमान अञ्जनी का पूत। ठीक ठोक करती कालो दूस के देहि का भूत। इती घडी, इता पहर। छत्तीस कुराना छोड़ देना। नर छोड़े, इसके मापरडा घर गाड। हव चडे काल, उहेस दूसलय साचा, फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥ छू

(१३) आगे देखु तर आग्याचे ताल बसे। पिछे देखू तर नारसिंग बुआ बसे। डावे हात कू हनुमन्त बीर बसे। सिर राखे गोरखनाथ। बसे दूर से भूत को बाँधु। सवा मन का जञ्जीर पाँव में डालो। मुन्ज्या झोटिङ्ग की खाननी धालू। हमको करे खरा मन्तर करे। दिठ करे, मुठ करे। जन्तर करे, मन्तर करे। जो करे, वही मरे। एक लाख अस्सी हजार पिर पैगम्बर की दुहाई। फिरे मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥ छू

(१४) बाजत गाजत, हनुमन्त आला। पहाड - पर्वत, फोडीत आला। भूत बाँध, पलीत बाँध। चेडा बाँध, चमेट बाँध। आकाश का बाँध, अड़ोसी का बाँध, पड़ोसि का बाँध, पाताल का वीर बाँध। ना बाँधे, तो माँ का दूध हराम करे। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥ छू

(१५) ओम नमो आदेश गुरू को। ओम नमो हनुमन्त जती। पाके मूखान फूटे, खूरी गुरू गोरख की वाचा। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। ब्रह्म वाचा, रुद्र वाचा। विष्णु वाचा, सारे उखाचा। जाए तेच हयार-कूर, पडेलाल गोपाल। गोरखनाथ, तुम्हारी वाचा। फूरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। गुरू की वाचा ॥ छू

परम पूज्य स्वामी अक्षोभ्यानन्द सरस्वती जी से प्राप्त :

सिद्ध शाबर मन्त्र

संग्रह-कर्त्ता : पं० कृष्णानन्द मिश्र 'वैद्य'

ककरा, दुबावल, प्रयाग-राज [उ० प्र०]

१. चमत्कारी हनुमत जँजीरा मन्त्र

मन्त्र—हनुमन्त वीर ! वज्र वेग चल । लोहे की गदा ले, सोंटा ले, तेल-सिन्दूर की पूजा ले । हं-हंकार पवन-पूत ! सन सन सन, चक्र हस्त कील, भैरो कील, देव कील, दानव कील, राक्षस कील, ब्रह्म-राक्षस कील, डंकिनी कील, शंकिनी कील, मरघट कील, मसान कील । मेरे कीले न कीले, तो हनुमन्त यती की दोहाई । आकाश कील, पाताल कील, पवन कील, पानी कील । मेरे कीले न कीले, तो लक्ष्मण यती की दोहाई। मन्त्र चलते की चाल बाँधो, वैरी की दृष्टि बाँधो, लोधी की झोटी बाँधो, शरित बाँध, शीत बाँध, कीट् बाँध, भूत बाँध, प्रेत बाँध, देव बाँध, परी बाँध, सर्व बलाय बाँध । कारा गेर हमारे गुरु का द्वति सङ्के । फुरो मन्त्र, ईश्वरो मन्त्र, महादेव फुरो वाचा । निज्व लङ्ग ले ।

विधि—सिंहासन पर भगवान् सीता-राम का ध्यान करे । सीता माता के हृदय में शारदा माता हैं। हनुमान जी हाथ जोड़े खड़े हैं। यह प्रार्थना करे कि माँ शारदे ! आप सीता-रूप से हनुमान जी को आज्ञा दें कि वे हमारे दुःख को दूर करें—

मङ्गल मूरत, मारुति-नन्दन । सकल अमङ्गल-मूल-निकन्दन ॥
पवन-तनय सन्तन-हितकारी । हृदय विराजत अवध-विहारी ॥
मातु-पिता-गुरु-गण-पति शारद ! शिवा समेत शम्भु-शुक-नारद ॥
चरण वन्दि बिनवहुँ सब काहू । देहि राम-पद नेह निबाहू ॥
वन्दौं राम-लखन-वैदेही । जे तुलसी के परम सनेही ॥

२. हनुमान जी का रक्षा-कारक मन्त्र

मन्त्र—हनुमान पहलवान, बारह बरस का ज्वान। मुख में वीरा, हाथ में कमान। लोहे की लाठ, वज्र का कीला। जहँ बैठे, तहँ हनुमान हठीला। बाल रे, बाल राखो। सीस रे, सीस राखो। आगे जोगिनी राखो। पाछे नरसिंह राखो। इनके पाछे मुहमदा वीर छल करे, कपट करे, तिनकी कलक, बहन-बेटी पै परे। दोहाई महावीर स्वामी की।

विधि—१०८ बार रुद्राक्ष की माला से उक्त मन्त्र का 'जप' करे। गुगुल से हवन करे। सभी प्रकार की बाधाओं से रक्षा होती है। विपदाएँ नहीं आती हैं।

३. शीतला देवी का बाधा-नाशक मोहन-विधान

मन्त्र—मोहिनी-सोहनी बचके मारो। चलो मोहिनी, जग मोहो, संसार मोहो। राजा मोहो, परजा मोहो। सभा के बीच, पण्डित मोहो। इन्द्र की परी, दोहाई गौरा पारवती महादेव। ॐ क्रिया-क्रिया-क्रिया। पट्ट-पट्ट-पट्ट स्वाहा।

विधि—शीतला देवी का पञ्चोपचार-पूजन कर उक्त मन्त्र का नित्य ५ बार 'जप' करे। पूजा में केसर, बताशा, कपूर, अगरबत्ती, नींबू, माला, फूल का प्रयोग करे। यह मोहन-विधान है। प्रेत-बाधा भी दूर होती है।

४. अग्नि-शमन का हनुमान-विधान

मन्त्र—अगिन के पूत बजरङ्ग बली। अगिन न बाँधो, तो अगिन का दूध हराम है। माँ का दूध हराम है। अगिन नहीं बाँधो, तो अगिन अचारण शोक। ॐ नमस्य श्री हनुमान नाथ गोसाईं। हमारा काम विजय करे। जोधा हंकार हाहाकार। ॐ नमो बजरङ्ग बली।

विधि—उक्त मन्त्र के 'जप' से अग्नि शान्त होती है।

५. सर्व-कार्य-सिद्धि एवं रक्षा-कारक चौंतीसा मन्त्र

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

मन्त्र—सातो पुत्र कालिका, बारह वर्ष कुँआर। एक देवी परमेश्वरी, चौदह भुवन दुवार। दो ह्रीं पक्षी, निर्मली तेरह देवी। देव अष्ट-भुजी परमेश्वरी। ग्यारह रुद्र-शरीर। सोलह कला सम्पूर्ण त्रय देवी। रक्ष-पाल दश औतार। उचरी पाँच पाण्डव। नार नव नाथ। षट-दर्शनी पन्द्रह तिथौ। जान चौही कीटी। परसिये काट माता। मुशकिल आन।

विधि—पहले भोज-पत्र पर अष्ट-गन्ध से अनार-कलम से यन्त्र लिखे। पञ्चोपचारों से 'यन्त्र' का पूजन करे। यन्त्र पर हाथ रखकर उक्त मन्त्र का १००० 'जप' करे। सर्व-काम सिद्ध होते हैं। रक्षा होती है।

६. चोर पहचानने का शाबर-विधान

मन्त्र—पाँच बाण लै लै हाथे, अर्जुन चलै चोर के साथ। दही नोन का आहुति देय, चोर के देह फफोला पड़े. भेल दोहाई ईश्वर गौरा पारवती की, नैना जोगिनी की।

विधि—दही-सेंधा नमक मिलाकर उक्त मन्त्र पढ़कर १०८ आहुति दे। सात दिन करने से चोर की देह में फफोले पड़ते हैं।

७. सरस्वती देवी का सिद्ध शाबर-विधान

मन्त्र—स्वरासाती स्वरासाती स्वरासाती मेरी माँ। सत् गुरु बन्धो पार, जसना देव राढ़ा। गौरी-गणेश, गौरा-पारवती, महादेव,

ढुण्ढ-राज, विश्वनाथ, काल-भैरव, कोतवाल, भीम, नकुल, सहदेव, अरजुन, धर्मराज, राजा रामचन्द्र, महावीर, ज्वाला-मुखी, हिंगलाज, दूरंगा, महा-काली। गुरु का वचन न जाय खाली। श्री गङ्गा, राजा रामचन्द्रजी, पाँचो पण्डवा, छठे नारायण निरंकाल, महादेवजी, गौरा-पारवती, महावीर हनुमानजी। कउने वरन का अक्षत, दोख भाल। डांड़ दइवी, चउवा चारपाया का नुकसान। मनई दुखी कि लड़का जनाना, कि घर लुटगा, कि चोरी होइ गइ, जगदम्बा मूल अक्षर दया बताई।

विधि--इस मन्त्र को सिद्ध करने पर सरस्वती कण्ठ में बैठ जाती हैं। प्रातः स्नान कर बिना देह पोछे, १ पैर पर खड़ा होकर, गीले कपड़े पहिने १ लोटा जल नीम के तने पर डाले, जो तने से बहता हुआ जड़ तक जाए। मुँह दक्षिण रक्खे। तीन दिशा में मन्त्र तब तक पढ़े, जब तक लोटे में जल रहे। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर जब काम पड़े, तब मन्त्र पढ़ते हुए रोगी का हाथ पकड़े। माँ सरस्वती कण्ठ में बैठ कर सब बता देंगी।

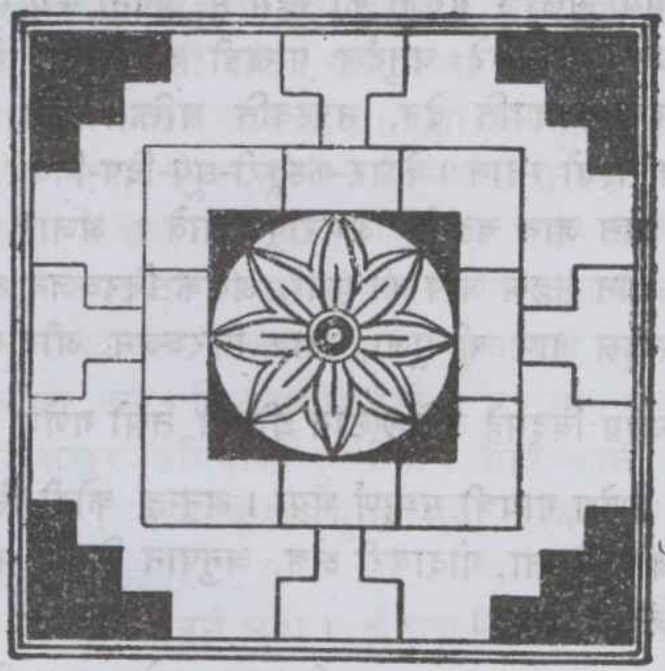

श्रीगणेश-गायत्री

(श्री मोहनदास से प्राप्त प्राचीन पाण्डुलिपि के आधार पर)

प्रस्तुत-कर्त्ता—जैरामभाई, लक्ष्मणभाई भरद्वाज

१६० ए, नेमीनाथनगर, राणीप, अहमदाबाद [गुजरात]

ॐ गुरुजी गणेशाय नमः। साचा मन्त्र सर्व-वशे महेश, मूल-चक्र में वशे गणेश। गुदा-चक्र, पद्म-चक्र करील्यो पाक, प्रेम-ज्योत हृदयो प्रकाश। गणपत स्वामि सन्मुख रहो, हृदय-वशे ज्ञान। अगम से कहो ओऽहं-सोऽहं शब्द साचा। विरला नरं जोगेश्वर ल्यो, चतुर्वेद मुख से कहे। सर्व-कमल फेर, घर ल्याव। इंगला-पींगला-सुषुम्णा तीनु एक घर ल्याव। बंक नाड वेग कर ल्याव। झग-मग ज्योत जगाव। आत्मा से परमात्मा के दर्शन घट में पाव। कहे श्री आद्यनाथजी सुनो अणघड देव। त्रिकुटी समाज शिव-शून्य में लगाव। एकवीश अवनी फिर नहि आवे। सत साहरे में मिल जावे। झण-झण-झणकार वागे। तत्काले पत्काल से भया मेला। गुरुजी की रहेम से, अपनी फेम से भया नाद-बुन्द का मेला। मूल द्वारे चतुर्दल पांखडी का वासा, जहाँ गण-पति देव का वासा। गणपति देव, सरस्वति शक्ति। चुंवा वाहन, गोदा-वरी क्षेत्र करील्यो स्नान। केशर-कस्तूरी-धूप-दिप-निवदे पूजा। आस-पास लघु-श्वास जान चढावे, अमरापुर जावे। अजान चढावे, नरक मां जावे। तीन सहस्र जाप की पूजा, अलक निरञ्जन अश्व-ज्ञान की पूजा। छः सहस्र जाप की पूजा, अलक निरञ्जन और नहि दूजा।

वक्र-दन्ताय विद्महे उच्छिष्टाय धीमही तन्नो गणेश प्रचोदयात्।

आटले गणेश गायत्री सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटी सिद्धो, कैलागर पर्वत, त्र्यम्बक देवता, गोदावरी क्षेत्र, अनुपान शिला पर बैठकर गुरु गोरखनाथजी ए किया।

विशेष—उक्त शाबर गायत्री 'गुप्त गणेश गायत्री' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें योग-भक्ति के साथ ही स्वर-विज्ञान भी है। यह शक्ति

तक पहुँचने की सीढ़ी है। इसमें थोड़े में बहुत समाया है। निम्न स्तर के लोगों के लिए तो यह बहुत उपयोगी है। विद्या गुरु-मुखी है, पर आत्म-ज्ञान की ओर जानेवालों के लिए श्रेष्ठ आधार है।

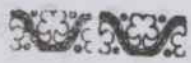

त्रिकाल-गायत्री

(हस्त-लिखित प्राचीन संग्रह से उद्धृत)

ॐ गुरुजी सत नमो आदेश। गुरुजी कु आदेश। ॐ गुरुजी अमर जोगी, अमर-काया। अमर-लोक से उतरी माया, ब्रह्मा-विष्णु-महेश जाया। हाड-चाम की मठी, बिच में पवन का थम्भा। न गले ज्ञान, न पडे काया। जिसका ध्यान सदा शिवजी ये लगाया। त्रि-काल गायत्री सञ्जीवन मन्त्र। महादेव जी ये पार्वती जी कु सुनाया। आवे न जाय, मरे न जन्मे। देवी पार्वती ले उतरे भव-पार। कहाँ से उत्पत्ति ? गौरी देवी शीर्ष थी उत्पत्ति। कण्ठ से उत्पत्ति। सरस्वति सुरा मूल-बन्ध। एक जन्मे शीलवन्ती, गर्भवन्ती सत्य जन्मी। कृष्ण-पक्ष अनली मन्त्र, रिद्धि-सिद्धि-भण्डार भरती राखे। राख माता अघोर, घट-पिण्ड पडते राख। इस प्राण को कवी न खावे काल। ब्रह्मा, विष्णु, महेश पुरे शाख। त्रि-काल गायत्रि मन्त्र, ईश्वर गौरी देवी पार्वती से कहे। मूल दवारे गोबरा करे, ब्रह्मा ये भर्या कमण्डल। विष्णु ये भरा जारी। महादेव जी भर-भर लावे। पार्वती जी सो कोल देवे। गोरक्षनाथ जी खट-चक्र पुरे। ब्रह्मा चार वेद का रटण करे। विष्णु-गायत्री का जाप करे। हनुमानजी चौकी करे। त्रि-काल गायत्री मन्त्र - जाप सम्पूर्ण भया। कैलाश में बेठ शङ्कर उमियाजी कु कीया। प्रातः-काले जपे, रिद्धि-सिद्धि-भण्डार भरे। मध्यान्हे जप मुक्ति पावे, सायं-काले जपे शिव-पुरी में वास।

त्रि-काल गायत्री सम्पूर्ण भया। कैलाश में बेठ के शङ्करे उमिया जी कु किया।

एक दुर्लभ पाण्डुलिपि

श्री आशुतोष अवस्थी, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

(फोटो-कापी की प्रतिलिपि)

कराही-स्तम्भन मन्त्र—तैल थांम्भो कै कराही का यो एकै एवरे एक अक्षत मन्त्र पठि डारै। क्रिआ केवेर्त एक अङ्क रोरि पडि डारै। तेधान बाँधो।

तेल थाँभो, जल थाँभो ले कै धार। अष्ट - धातु वैद सुन्दर थाँभो, वायु-वीर अग्निया वेताल। श्रहो तेल, जरहु-जरहु। जनि धरहु जनि काए डेला, गुहु भारि भक्ष जर। गोरख जागे, गोरख राऊ दोहाई। जैपाल राजा सिद्ध कार जगै। होऊ दोहाई, पार्वती के दुहाई। जौन बाँधै मन्त्र, कर्म्मनाथ योगी ते सिष।

मन्त्र-विधि जगावना—नो चन्द्रमा या सूर्य - ग्रहण होय, तौ गहती कनेर लाल की डाली आँगुल भर मोटी, हाथ भरी लम्बी एक चोट काट के श्वेत कनेर की डा.....

अथ मोहन मन्त्र—ॐ नमो मोहीनी महा-मोहनी अमृत वासनी स्वाहा। बाउर मन्त्र भणी अमृत रोटि को कीजै सर्व - जन वश्य भवती ॥१॥ ऐं नमो सिद्धि। गुरु के पाय जानुं। अर्जुन के वान। थानेश्वरी की माटी बन्धो। घाउन बन्धो। पाटि मेरि, भक्ति गुरु की। शक्त फुरो, मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

वार २१ नु जी ये डाभ रात्रि णासु डाडौ दिजे तेल वार २१ मन्त्रिचो परि जे घाऊ दूष तो रहे सही ॥

ॐ ऐं कलीं श्रीं ह्रीं हसौ वद-वद वागवादिनी तुभ्यं नमः ॥ दिन प्रतिवार १०८ जप-विधि, जे **विद्या-मन्त्रः**।

ॐ ह्रीं श्रीं कीत्ति-मुख मन्दिरे स्वाहा। **मोहन मन्त्र** रात्रि द्वारे जात्यं वेला २१ मन्त्र भवि मुषी हात फेरि जे सभा मोहन।

ॐ सिद्धि दिवालिनि रातिना **वशीकरण विधि**—मानष री माथा री खोपरी लेइनै काजल पारि जे। ते काजल घोर निमाटी मसान नी

राख ए सर्व ए खण्टाकरी ने। वाटे पाछे ए मन्त्र सन्धाते वार १०८ वेरा मन्त्रि जे—ॐ क्लीं महा-पिशाचनि ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

वरे अेवगाई जे अथवा पेट हि दिजे अथवा मस्तके ना पीजै पुरुष-स्त्री वस्यं भवति।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम ग्रहे धनं परब चिन्ता चूरय स्वाहा ॥ बार १०८ ॥

विधि—ना पीये प्रभातिं दातन करीण धनी लक्ष्मी - प्राप्ति। व्यापार बहु लाभ व ॥

मन्त्र—ॐ नमो श्रीं ह्रीं काम - देवायः महानुभावाय कमेश्वराये अमु (अमुकं) वीर्यं मुञ्च मुञ्च मुक्रं (शुक्रं) मुञ्च मुञ्च रक्त कणवीर दर्श-नेन स्वाहा ॥ बार १०८ ॥

विधि—शता कनेर (रक्त कनेर) का फूल मन्त्र कर स्त्री को दिखा दीजे, तो तुरन्त खलित होवे। स्त्री वश्यं।

मन्त्र—श्री विमले श्री कमले उज्ज्वले मुकुटे विकटे विस्फोटयः सत्यं प्रकटय चोरं निकसय स्वाहा।

विधि—रविवारे पनिहारी मार्गरा कास्तरा ॥७॥ प्रभात समै काक अनबोल्यां ली जेपा है मन्त्र ची ब्या माहे लिखिजै चीठित ले चोर नाम निलिख जे पाछे बार ४ तण्डुल (चावल), कांकर (कङ्कड़) मन्त्री जे ठीमा हि घालिजे मति तरिगौ पविजे। पाछे कुछ पानी भरी सूर्य साक्षि करी पाणी माहि चिटिया (चिट्ठी) लीजे, चोर तरंति नात्र सन्देहः।

मन्त्र—ॐ नमो दूगर ब्याई वन्नरी तिन जायो हनुमन्त बलि धन होडी काख बिलाई तीने जलाई भस्मन्तं नू लऊ लि ॥७॥ सुनु जी ॥ तेऽलीकूऽली माहे छाती जे पाछे पारिग भरि माट लिहें टि लीजै सीधी ॥१

इति श्री शाबर-तन्त्र-मन्त्र-संग्रह समाप्तं ॥ सम्वत् १९२३ अश्वीन-मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ तृतीयां पुस्तक लिखेते प्रयागदत्त त्रिपाठी कनक-गिरि-मध्ये। (भाषा-मर्मज्ञ कृपया इस 'पाण्डु-लिपि' का अर्थ लिखें–सं.)

अनुभूत शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामशङ्कर उपाध्याय
उप-डाक-पाल, बड़का राजपुर, बक्सर (बिहार)

[निम्न मन्त्रों में सिद्धि की आवश्यकता नहीं है। ये मन्त्र स्वयं-सिद्ध हैं और 'प्रयोग' करते ही प्रभाव दिखाते हैं। सभी मन्त्र अनुभूत हैं। 'प्रयोग' कर लाभ उठावें।—प्रस्तुत-कर्ता]

(१) अभीष्ट व्यक्ति को बुलाने का मन्त्र

झां झां झां हां हां हां हें हें ॥

विधि—अभीष्ट व्यक्ति की मन-ही-मन भावना कर उपर्युक्त मन्त्र का ५०० बार 'जप' करे। अभीष्ट व्यक्ति आपके पास आ जाएगा। यदि एक दिन में न आए, तो निरन्तर सात दिन 'जपे'। अवश्य ही आ जाएगा।

(२) आकर्षण मन्त्र

ॐ चामुण्डे ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा ॥

विधि—जिसे देखकर उक्त मन्त्र मन-ही-मन जपा जाए, वह आकर्षित होता है। अच्छा होगा कि पहले मन्त्र का दस हजार जप कर ले, जिससे मन्त्र पूर्ण जागृत हो जाए।

(३) वशीकरण-मन्त्र

(क) ॐ नमः कट विकट घोर-रूपिणी स्वाहा ॥

विधि—भोजन करते समय, चावल को सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, जिस व्यक्ति का नाम लेकर खाएँगे, वह वशीभूत होगा। 'प्रयोग' सात दिन तक करे।

(ख) ॐ वश्य-मुखी राज-मुखी स्वाहा ॥

विधि—उक्त मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर उससे मुँह धो ले। ऐसा सात बार करे। नित्य प्रातः-काल भी किया जा सकता है। इससे सभी देखनेवाले वशीभूत होंगे।

(ग) ॐ राज-मुखि वश्य-मुखि स्वाहा ।।

विधि—प्रातः-काल स्नान के पूर्व शय्या पर बैठकर, बाँएँ हाथ में तेल लेकर उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर अभिमन्त्रित करे। फिर दाहिने हाथ की अनामिका से तेल माथे पर लगा ले। तत्पश्चात् स्नान करे। इससे सभी देखनेवाले वशीभूत होंगे।

(४) मनोवाञ्छित कार्य पूरा कराने का मन्त्र

"ॐ हुं फट्" या "स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं"

विधि—जिस व्यक्ति से कार्य लेना हो, उसे देखते हुए उपर्युक्त दोनों मन्त्रों में किसी एक का सौ बार 'जप' करे। तब उससे बातचीत करे। आप जो कहेंगे, उसे वह करने को तैयार हो जाएगा।

(५) क्रोध प्रशमन-मन्त्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रोध - प्रशमन ह्रीं ह्रीं हां क्लीं सः सः स्वाहा ।

विधि—उक्त मन्त्र सात बार पढ़कर अपने पहने वस्त्र के एक कोने पर, एक गाँठ लगा दे। तब क्रोधित व्यक्ति के पास जाए। आपको देखते ही उसका क्रोध शान्त हो जाएगा।

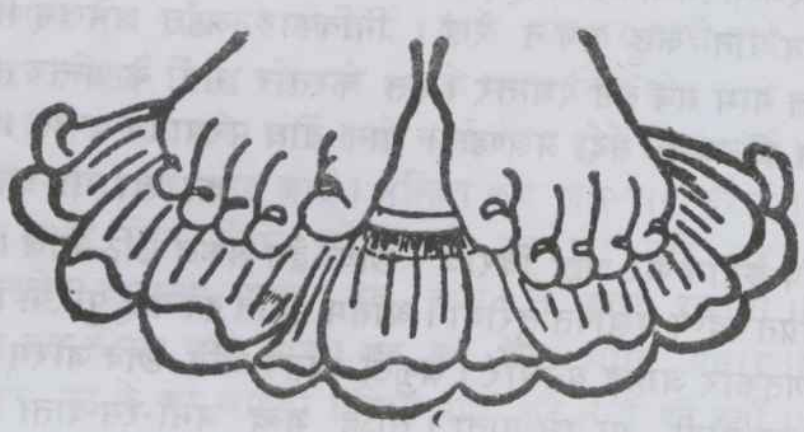

पैंतीस अक्षरी मन्त्र

प्रस्तुत 'पैंतीस अक्षरी' मन्त्र पञ्जाबी भाषा का है। पञ्जाबी सन्त पूज्य श्री सदानन्द जी ब्रह्मचारी, साक्षी विनायक, वाराणसी की कृपा से प्राप्त है। इस मन्त्र का प्रभाव अद्भुत है। नित्य १०८ बार पूर्व की ओर मुँह कर इस मन्त्र का जप करने से लक्ष्मी एवं पुत्रादि की प्राप्ति होती है। दक्षिण की ओर मुँह कर जपने से शत्रुओं का नाश होता है। पश्चिम की ओर मुँह कर जप करने से नर-नारी वशी-भूत होते हैं। उत्तर की ओर मुँह कर जप करने से वाणी सिद्ध हो जाती है। १२ दिन लगातार पाठ करने से कार्य-सिद्धि होती है। जिस किसी को गर्भ-पात होता हो, उसे इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को एक मास पिलाने से पुत्र की प्राप्ति होती है। विशेष लाभ के लिए मन्त्र के जप के साथ-साथ नित्य हवन भी करे।

ॐ एक ओंकार श्रीसत गुरु प्रसाद ॐ। ॐ अथ पैंतीस अक्षरी लिख्यते

(राग रामकली। महल्ला दश)।

ओंकार सर्व - प्रकाशी। आतम शुद्ध करे अविनाशी॥
ईश जीव में भेद न मानो। साद चोर सब ब्रह्म पिछानो॥
हस्ती चींटी तृण लो आदम। एक अखण्डत बसे अनादम्॥

ॐ आ ई सा हा

कारण करण अकर्ता कहिए। भान प्रकाश जगत ज्यूं लहिए॥
खान पान कछु रूप न रेखं। निर्विकार अद्वैत अभेखम्॥
गीत गाम सब देश देशन्तर। सत करतार सर्व के अन्तर॥
घन की न्याईं सदा अखण्डत। ज्ञान बोध परमातम पण्डत॥

का खा गा घा ङा

चाप ङ्यान कर जहाँ विराजे। छाया द्वैत सकल उठि भाजे॥
जाग्रत स्वप्न सखोपत तुरीया। आतम भूपति की यहि पुरिया॥
झुणत्कार आहत घनघोरं। त्रकुटी भीतर अति छवि जोरम्।
आहत योगी ञा रस-माता। सोऽहं शब्द अमी-रस-दाता॥

चा छा जा झा ञा

टारनभ्रम अघन की सेना। सतगुरु मुकुति पदारथ देना॥
ठाकत दुगदा निरमल करणं। डार सुधा मुख आपदा हरणम्॥
ढावत द्वैत हन्हेरी मन की। णासत गुरु भ्रमता सब मन की॥

टा ठा डा ढा णा

पार ब्रह्म सम्माह समाना। साद सिद्धान्त कियो विख्याना॥
फाँसी कटी द्वात गुरु पूरे। तब वाजे सबद अनाहत धत्तूरे॥
बाणी ब्रह्म साथ भये मेल्ला। भंग अद्वैत सदा ऊ अकेल्ला॥
मान - अपमान दोऊ जर गए। जोऊ थे सोऊ फुन भये॥

पा फा बा भा मा

या किरिया को सोऊ पिछाना। अद्वैत अखण्ड आपको माना॥
रम रह्या सबमें पुरुष अलेखँ। आद अपार अनाद अभेखम्॥
ड़ा ड़ा मिति आतम दरसाना। प्रकट के ज्ञान जो तब माना॥
लवलीन भए आदम पद ऐसे। ज्यूँ जल जले भेद कहु कैसे॥
वासुदेव बिन और न कोऊ। नानक ॐ सोऽहं आत्म सोऽहम्॥

या रा ला वा ड़ा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं लृं श्री-सुन्दरी-बालायै नमः॥

॥ फल-श्रुति (इसका पाठ जपान्त में मात्र एक बार करे)॥

पूरब मुख कर करे जो पाठ। एक सौ दस औ ऊपर आठ॥
पूत लक्ष्मी आपे आवे। गुरु का वचन न मिथ्या जावे॥
दक्षिन मुख घर पाठ जो करैं। शत्रू ताको तच्छिन्न मरैं॥
पच्छिम मुख पाठ करे जो कोई। ताके बस नर-नारी होई॥
उत्तर दिसा सिद्धि को पावे। ताके वचन सिद्ध होइ जावे॥
बारा रोज पाठ करे जोई। जो कोई काज होवे सिद्ध सोई॥
जाके गरभ-पात होइ जाई। मन्त्रित कर जल-पान कराई॥
एक मास ऐसी विधि करे। जनमे पुत्र फेर नहिं मरे॥
अठराहे दाराऊ पावा। गुरु - कृपा ते काल रखावा॥
पति बस कीन्हा चाहे नार। गुरु की सेवा माहि अधार॥
मन्तर पढ़ के करे आहुती। नित्य-प्रति करे मन्त्र की रुती॥

॥ ॐ तत्सत् ब्रह्मणे नमः॥

शाबर-मन्त्र-रत्नाकर

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भैरवानन्दनाथ

शाम्भवी तान्त्रिक शोध संस्थान, १०८, चकराघाट, सागर–२ (म. प्र.)

१. आत्म-रक्षा मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को। वज्र वज्री, वज्र किवाड़। वज्री मैं बाँधा दसों द्वार को घाले, उलट वेद वाही को खात। पहली चौकी गणपति की, दूजी चौकी हनुमन्त जी की, तीजी चौकी भैरों की, चौथी राम। रक्षा करने को श्री नृसिंहदेव जी आवे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। सत्य नाम आदेश गुरू का।

विधि—किसी भी शनिवार से 'जप' आरम्भ करे। २१ दिनों तक नित्य घृत का दीपक जलाकर दीपक का पञ्चोपचारों से पूजन करके १००० 'जप' करे और घृत-गुग्गुलु से 'हवन' करे। अनुष्ठान पूरा हो चुकने पर, जब आवश्यकता हो, १०८ बार 'जप' करके भस्म को अभिमन्त्रित कर शरीर पर मले। इससे सर्व-विध रक्षा होगी।

२. आधा-सीसी-नाशक मन्त्र

(अ) ॐ नमो वन में ब्याही वानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद-कूद शाखन पै, कच्चे वन फल खाय। आधा तोड़ै, आधा फोड़ै, आधा देय गिराय। हँकारत हनुमानजी, आधा-सीसी जाय।

(ब) वन में ब्याई अञ्जनी, कच्चे वन फल खाय। हाँक मारी हनुमन्त ने, इस पिण्ड से आधा-सीसी उतर जाय।

विधि—पहले किसी शुभ मुहूर्त में १०८ 'जप' करके सिद्ध करे। फिर ७ बार मन्त्र पढ़ते हुए राख से झाड़ने पर आधा-सीसी का दर्द ठीक होगा।

(स) ॐ नमो वन में ब्याई बन्दरी। खाय दुपहरिया, कच्चा फल कन्दरी। आधी खाय के, आधी देती गिराय। हूँकत हनुमन्त के, आधा सीसी चली जाय।

विधि—रोगी को सामने बिठाकर, उक्त मन्त्र पढ़ते हुए भूमि पर चाकू से ७ रेखाएँ खीचें, तो आधा-सीसी से मुक्ति मिले।

३. सिर-दर्द-नाशक मन्त्र

ॐ नमः आज्ञा गुरू की। केश में कपाल, कपाल में भेजा बसै। भेजा में कीड़ा, करे न पीड़ा। कञ्चन की छैनी, रूपे का हथौड़ा। पिता ईश्वर गाड़ इनको, थापै श्रीमहादेव तोड़ै। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥

विधि—पहले १०८ 'जप' करके सिद्ध करे। फिर 'प्रयोग' करते समय सात बार मन्त्र पढ़ते हुए राख से झाड़ें।

४. उदर-पीड़ा-नाशक मन्त्र

(अ) ॐ नून तूं सिन्धु, नून सिन्धु वाया। नून मन्त्र, पिता महादेव रचाया। महेश के आदेश, मोही गुरुदेव सिखाया। गुरु-ज्ञान से, हम देऊँ पीरे भगाया। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आदेश हाड़ी रानी चण्डी की दुहाई॥

विधि—दाहिने हाथ की तीनों अँगुलियों (अँगूठा, तर्जनी और मध्यमा) से सेंधा नमक का एक टुकड़ा उक्त मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करके खिलाने से पेट-दर्द में लाभ होता है।

(ब) पेट-व्यथा, पेट-व्यथा, तुम हो बलवीर। तेरे दर्द से पशु, मनुष्य नहीं स्थिर। पेट-पीर लेवों पल में निकार, दो फेंक सात समुद्र पार। आज्ञा कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई॥

विधि—बाँएँ हाथ से दर्दवाले भाग को स्पर्श करके सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर झटक दें, तो पेट-दर्द में लाभ होगा।

(स) ॐ नमो काली कङ्कालिनी, नदी-पार बसै इस्माइल योगी। लोहे का कछौटा काटि-काटि, लोहे का गोला काट-काट, तो शब्द साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

विधि—रविवार या मङ्गलवार को चाकू, छुरी या तलवार से रोगी को झाड़ें। एक बार मन्त्र पूरा होने पर, जमीन पर हथियार से एक रेखा खींचें। इस प्रकार सात बार झाड़ें। सातवीं रेखा खींचने

के बाद सभी रेखाएँ काट दें। पेट-दर्द नष्ट होगा। यह मन्त्र विशेष-रूप से वायु-गोले के दर्द में लाभ-प्रद है।

५. आँख का दर्द-नाशक मन्त्र

(अ) सातों रीदा, सातों भाई। सातों मिलके, आँख बराई। दुहाई सातों देव की। इन आँखिन पीड़ा करै, तो धोबी की नाँद चमार के चूल्हे में पड़ै। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि—उक्त मन्त्र को होली या दीवाली की रात से आरम्भ करके, इक्कीस दिन तक नित्य १०८ बार 'जप' करें। 'दीपक' का पूजन करके 'जप' करें तथा घृत-गुग्गुलु से 'हवन' करें। फिर प्रयोग के समय २१ बार मन्त्र पढ़कर, आँख पर फूँक मारने से नेत्र-पीड़ा तुरन्त शान्त होती है।

(ब) ॐ नमो श्रीराम की धनुही, लक्ष्मण का बान। आँख दर्द करे, तो लक्ष्मणकुमार की आन॥

विधि—इक्कीस बार उक्त मन्त्र पढ़ते हुए नीम की डाली से झाड़ने से नेत्र-पीड़ा नष्ट होती है।

(स) ॐ झलमल जहर भरा तलाई, अस्ताचल पर्वत से आई। जहाँ बैठा, हनुमन्ता जाई। फूटै न पाकै, करै न पीड़ा। जती हनुमन्ता, हरै पीड़ा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। सत्य नाम आदेश गुरू को।

विधि—ग्यारह बार मन्त्र पढ़ते हुए, नीम की डाली से झाड़ने से नेत्र-पीड़ा में लाभ होगा। यह क्रिया तीन दिनों तक करनी चाहिए।

६. दन्त-पीड़ा-नाशक मन्त्र

(अ) काहे रिसियाए, हम तो अकेला। तुम हो बत्तीस बार हम-जोला। हम लावें, तुम बैठे खाओ। अन्त-काल में सङ्गहि जाओ॥

विधि—प्रातः-काल मुँह धोने के समान एक चुल्लू जल को एक या तीन बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कुल्ला करने से दाँतों के दर्द से छुटकारा मिलता है। यदि यह क्रिया नित्य नियमित रूप से की जाए, तो दाँतों का कोई रोग हो ही नहीं सकता।

(ब) आग बाँधों, अगिया-वेताल बाँधों। सौ खाल विकराल बाँधों, सौ लोहा लोहार बाँधों। बजर अस होय वज्र - घन - दाँत, पिराय तो महा-देव की आन ॥

विधि—तीन बार उक्त मन्त्र पढ़ते हुए हाथ की अँगुलियों से झाड़ दे, तो दन्त-पीड़ा का शमन होता है।

(स) ॐ नमः आदेश गुरू को। सवारी में शीशी, शीशी में मीची। मीची में सूड़ा, मसूड़ा में पीड़ा। कीड़ा परै, पीड़ा टरै। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥

विधि—उक्त मन्त्र का 'प्रयोग' केवल मङ्गलवार को ही किया जाता है। लोहे की दो छोटी - छोटी कीलें लेकर, ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर झाड़े। एक कील कुएँ में डाल दे तथा दूसरी कील को खट्टे जल में भिगोकर नीम के वृक्ष में ठोंक दे। दाँतों के दर्द से मुक्ति होगी और यदि दाँतों में कीड़े लगे हों, तो वे मर जाएँगे।

(द) ॐ नमो कोटरे, तू कुण्ड - कुण्डाला। लाल पूँछ, तेरा मुख काला। मैं तोहि पूँछूँ, कहाँ ते आया ? तोड़ मांस, सबको क्यों खाया ? अब तू जाय, भस्म हो जाय। गोरखनाथ के लाग पाँय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

विधि—उक्त मन्त्र को सात बार पढ़ते हुए, नीम की डाली से झाड़ने से दाँतों के कीड़े मर जाते हैं और दर्द नष्ट हो जाता है।

७. मासिक धर्म के कष्टों का निवारण

(अ) ॐ नमो आदेश देवी मनसा माई। बड़ी-बड़ी अदरक, पतली-पतली रेश। बड़े विष के जल, फाँसी दे शेष। गुरू का वचन जाय खाली। पिया पञ्च - मुण्ड के वाम - पद ठेली। विष - हरी राई की दुहाई फिरै ॥

विधि—अदरक का एक टुकड़ा तीन बार अभिमन्त्रित करके रोगिणी को खिलाने से, मासिक-धर्म के समय होनेवाले कष्ट से आराम मिलता है।

(ब) आदेश श्रीरामचन्द्र सिंह। गुरू को तोड़ूँ गाँठ, ओंगा ठाली तोड़ दूँ। लाय जोड़ि देऊँ, सरित परित देकर पाय। यह देखि हनुमन्त

दौड़कर आय। अमुक का देह, शान्ति वीर भगाय। श्रीगुरु नरसिंह की दुहाई फिरै॥

विधि—पान का बीड़ा तीन बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके रोगिणी को खिलाए, तो मासिक - धर्म के सभी विकारों से मुक्ति मिले।

८. पीलिया झाड़ना

ॐ नमो वीर वैताल, असराल नारसिंह देव। खादी - तुषादी पीलिया कूँ मिटाती कारै। झारै पीलिया, रहे न नेक निशान। जो कहीं रह जाय, तो हनुमन्त की आन। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

विधि—पहले २१ दिनों तक उक्त मन्त्र को नित्य १०८ 'जप' कर सिद्ध कर ले। रोगी को सामने बिठा ले। काँसे की कटोरी में तेल भरकर रोगी के सिर पर रखे। मन्त्र का 'जप' करते हुए, तेल को कुश से घुमाते रहें। जब तेल पीला पड़ जाए, तब कटोरी नीचे उतार ले। यह 'प्रयोग' लगातार तीन दिन तक करे। पीलिया का रोग ठीक होगा।

९. कुश्ती जीतने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी। अङ्ग पहरूँ भुजङ्गा, पहरूँ लोह-शरीर। आवत हाथ तोड़ूं, पाँव तोड़ूं। सहाय हनुमन्त वीर, उठ अब नृसिंह वीर। तेरी सोलह सौ सिङ्गार। मेरी पीठ लागे नहीं, नहीं तो वीर हनुमन्त लजावे। तू लेहु पूजा-पान-सुपारी-नारियल-सिन्दूर, अपनो देहु सुबल मोही पर - देहु भक्ति। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि—किसी भी मङ्गलवार को प्रातः - काल हनुमान जी की मूर्ति या चित्र का पूजन करे। पूजन में पान, सुपारी, नारियल तथा लड्डू हों। सिन्दूर का सर्वाङ्ग में लेप करे। फिर एक हजार 'जप' करे। इस प्रकार ४० दिन तक नित्य पूजन तथा 'जप' करे। जब कुश्ती लड़ना हो, तब लाल लँगोट पहनकर, उपर्युक्त विधि से पूजन करके १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। कुश्ती में अवश्य जीत होगी।

१०. स्त्री-वशीकरण

(क) काम-रूप देस कामाख्या देवी, जहाँ बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी की लगी फुलवारी, फूल तोड़े लोना चमारी। जो इस फूल की सूँघे बास, तिस का मन रहे हमारे पास। महल छोड़े, घर छोड़े। आँगन छोड़े, लोक-कुटुम्ब की लाज छोड़े। दुहाई लोना चमारी की। धनन्तरी की दुहाई फिरै॥

विधि—शनिवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक नित्य १४४ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। धूप, दीप, नैवेद्य और मद्य से 'दीपक' में नित्य पूजन भी करे। 'प्रयोग' के समय उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित पुष्प जिस साध्या को सुँघाया जाएगा, वह वशीभूत होगी।

(ख) धूली-धूली विकट चन्दनी पर मारूँ धूली। फिरै दिवानी, घर तजे, बाहर तजे, ठाड़ा भरतार तजे। देवी एक सठी कलवान तू। नाहरसिंह बीर अमुकी नें उठा ल्याव। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥

विधि—पहले किसी शुभ मुहूर्त में उक्त मन्त्र का १०,००० 'जप' करे, फिर 'प्रयोग' करे। शनिवार को जिस स्त्री की मृत्यु हुई हो, उसकी चिता से पैरों की तरफ का एक अङ्गार लेकर, अलग मिट्टी के सकोरे में रखकर, उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करे। फिर उस अङ्गारे को पीसकर चूर्ण कर ले। यह चूर्ण साध्या के सिर पर डालने से उग्र वशीकरण होगा।

(ग) आकाश की जोगनी, पाताल का नाग। उड़ जा अबीर, तू फलानी के लाग। सूते सुख न बैठे सुख, फिर-फिर देखै मेरा मुख। हमकूँ छाँड़ि दूसर कने जाय, तो काढ़ कलेजा नाहरसिंह वीर खाय। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि-अबीर को गूग्गल की धूप देकर, एक पत्ते में रखकर अपने मुँह में रक्खे। फिर नदी या तालाब में डुबकी लगाकर उक्त मन्त्र सात बार पढ़े। पानी से बाहर आकर, पत्ते को मुँह से निकालकर, पुनः अबीर को गूग्गल की धूप दें। **इस अबीर को साध्या के मुँह पर या मस्तक पर तिलक लगाने से वह वशीभूत होगी।**

(घ) नमो जल की जोगनी, पाताल नाम जिस पर भेजूँ, तिस के लाग। सोने न पावै, सुख से बैठन न पावै, फिर-फिर ताके मेरा मुख। जो बाँधी छूटे, तो बाबा नरसिंह की जटा टूटे॥

विधि—चार लौंग एक पत्ते में लपेटकर, गूग्गल की धूप देकर मुँह में रखे और नदी या तालाब में डुबकी लगाकर उक्त मन्त्र सात बार पढ़े। फिर बाहर आकर, पत्ते में से लौंग निकालकर, पुनः गूग्गल की धूप देकर रख ले। एक लौंग साध्या को खिलाने से वशीकरण होगा।

कुछ उपयोगी टोटके

१. रविवार के दिन, पुराना बिजली का तार (ऐसा ताम्बे का तार, जिसमें कई वर्ष तक विद्युत्-प्रवाह हो चुका हो) थोड़ा - सा नीले या काले कपड़े में लपेटकर, बच्चे के गले में बाँधने से दाँत आसानी से निकलते हैं।

२. निर्गुण्डी की जड़ मङ्गलवार को बच्चे के गले में बाँधने से दाँत आसानी से निकलते हैं।

३. थोड़ी सी राई, नमक, आटा या चोकर और ३, ५ या ७ लाल सूखी मिर्च लेकर, जिसे 'नजर' लगी हो, उसके सिर पर सात बार घुमाकर आग में डाल दें। 'नजर' उतर जाएगी। 'नजर'-दोष होने पर मिर्ची जलने की गन्ध नहीं आती।

४. पुराने कपड़े की सात चिन्दियाँ लेकर, सिर पर सात बार घुमाकर आग में जलाने से 'नजर' उतर जाती है।

५. कुम्हार के हाथ में लगी मिट्टी तथा कुम्हार के चाक पर लगी मिट्टी, दूध या पानी के साथ लगभग एक तोला पिलाने से गर्भ-पात रुक जाता है।

६. प्रसव-पीड़ा हो रही हो और बच्चा न हो रहा हो, तो साँप की केंचुल स्त्री के नितम्ब पर बाँधें। प्रसव शीघ्र होगा।

७. बच्चे का पहला दाँत जब गिरे, तब उसे जमीन पर न गिरने दें। इसे चाँदी के ताबीज में भरकर बच्चे की माँ के बाँएँ हाथ, गले या कमर में बाँध दें। जब तक ताबीज शरीर पर रहेगा, दुबारा गर्भ-स्थिति नहीं होगी।

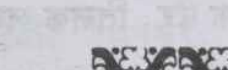

कुछ स्पष्टीकरण

(श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह एवं श्री रामकृष्ण व्यास)

(१) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ २३ में 'गण्डा' देने का मन्त्र है। वहाँ दिया हुआ मन्त्र और विधि दोनों ठीक हैं। कुछ विशेष विधि है, जो यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ। साधक के पास जब रोगी आए, तब उसके शरीर की लम्बाई के बराबर धागा ले। धागे को सात गुना कर, बराबर लम्बाई पर एक-एक गाँठ दे। अन्त में मन्त्र पढ़कर एक गाँठ और लगाए। कुल ७ गाँठ लगाए। फिर उसे रोगी के गले में पहना दे। मुर्त्तजा अली के नाम से बच्चों को सवा सेर मिठाई बाँटे या बँटवाए। मन्त्र को पहले 'पर्व-काल' या 'ग्रहण' में सिद्ध कर लेना चाहिए। तब रोग की शान्ति के लिए 'गण्डा' देने का प्रयोग करे।

(२) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ ७८ पर शत्रु को परास्त करने का मन्त्र दिया है। शत्रु का नाम तो सभी जानते हैं, किन्तु शत्रु की माँ का नाम भी उसके घर के आस - पास जाकर युक्ति से प्राप्त करना चाहिए। अन्यथा 'प्रयोग' न करे। पता - निवास आदि की आवश्यकता नहीं होती। यह विधि अपनानी आवश्यक है।

(३) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृ. ७६ में वशीकरण हेतु 'कलवा वीर' का मन्त्र है। स्त्री-वशीकरण एवं पुरुष-वशीकरण के लिए मन्त्र के प्रयोग में सुधार करना आवश्यक है। जैसे यदि स्त्री का वशीकरण करना है, तो 'फलानी' शब्द का प्रयोग करे और साध्य स्त्री का नाम ले। पुरुष के वशीकरण हेतु 'फलाने' शब्द का प्रयोग कर नाम ले।

(४) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ४२, मन्त्र २ (ॐ बलाई आरत कीरुत करु स्वाहा) में, शरीर की सात क्रियाओं (१ खाना, २ पीना, ३ शयन, ४ पेशाब, ५ शौच, ६ बैठना और ७ उठना) के करते समय मौन रखे तथा मन्त्र-जप २ बार करना चाहिए। मन्त्र (ॐ बिड-नालिया आसुत का सुत कास्तु स्वाहा) में, शरीर की पाँच क्रियाओं (१ खाना, २ पीना, ३ शयन, ४ पेशाब, ५ शौच) में मौन रक्खे और मन्त्र-जप ६० बार करे। इन दोनों मन्त्रों की साधना-अवधि ४६ दिन की है। साधक भोजन अपने हाथ से एक समय बनाए। भोजन में जौ के आटे की रोटी, चौराई का साग ले। सफेद वस्त्र पहनें, सत्य बोले।

प्रकाशकीय

'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के छठे भाग को प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ा हर्ष है। देश के साधना-प्रिय बन्धुओं ने इस संग्रह के सभी भागों का हार्दिक स्वागत किया है और इस लोक-प्रिय, किन्तु लुप्त-प्राय 'शाबर-साधना' पर इन छोटी-छोटी पुस्तकों द्वारा अत्यन्त उपयोगी प्रकाश पड़ा है। 'चण्डी-कार्यालय' में निरन्तर इस साधना - विषयक सामग्री आती ही जा रही है और उस सबको प्रकाशित किया जाएगा।

इस प्रकार 'शाबर-साधना' के सम्बन्ध में सहज ही एक 'शोधात्मक ग्रन्थ' अध्यात्म - प्रेमियों के लिए उपलब्ध हो जायगा। आशा है कि 'शाबर-मन्त्र-विद्या' के अन्य अनुभवी ज्ञाता महानुभाव भी इस 'ज्ञान-यज्ञ' में अपना योग-दान शीघ्र ही प्रदान करने की कृपा करेंगे। अग्रिम धन्यवाद-सहित :

'चण्डी'-कार्यालय, प्रयाग — **ऋतशील शर्मा**

नाग-पञ्चमी, २०५१ वि०–११ अगस्त, १९९४

❀ ❀ ❀

एक परामर्श

'गुरु' के बिना, शाबर-मन्त्र-साधना में सामान्य सीमा तक अथवा उचित मर्यादा तक ही प्रयत्न करें। स्वतः स्फुरण हेतु श्रद्धा - पूर्वक प्रार्थना करें। प्रयोग की सफलता के लिए भाग्य भी अच्छा होना चाहिए। अतः ज्योतिषी द्वारा आवश्यक परामर्थ भी लेना चाहिए। उग्र प्रयोगों (स्तम्भन, उच्चाटन आदि) में पारण का ज्ञान गुरुओं के पास ही होता है। अतएव ऐसे प्रयोग बिना गुरु के सान्निध्य के न करे। आस्था रक्खे, अन्ध-श्रद्धा नहीं।

जामनगर, गुजरात — —श्रीचन्दूलाल गण्डालाल शाह

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६